चरनदासजी की बानी

(पहिला भाग)

प्रकाशक
बेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद–२

[मूल्य ५) रु०

१९८१]

भाग १

जिसमें

पहिले इन महात्मा का संक्षेप में जीवन-चरित्र और उनके अनुभव की महिमा और सब संतों व साध महात्माओं के मार्ग के मूल तत्व की एकता दिखाई है।

और

बानी में उक्त महात्मा के ग्रंथ से अति मनोहर और हृदय-बेधक भजन, चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों से चुनकर मुख्य-मुख्य अंगों और रागों के अनुसार यथाक्रम रक्खे गये हैं।

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व संकेत भी नीचे लिख दिये गये हैं।

मुद्रक व प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद।

सातवाँ एडिशन] सन् १९७८

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

॥ भेट ॥

——:*:——

चरनदास जी की बानी उनके जीवन चरित्र के साथ आप साहिबों की भेट करने में हम यहाँ कुछ और लिखने की ज़रूरत नहीं समझते सिवाय इस के कि बाबू सरजू प्रसाद मुआफ़ीदार तेरही मुआफ़ी (ज़िला बाँदा) को धन्यवाद दें जिन्होंने इस पुस्तक की तैयारी और नये ढंग की तर्तीब में पूरी तरह से मदद दी है। जो कि उन के बुज़ुर्ग लोग चरनदास जी के ही मत के हैं इससे उनके पास बहुत पुराना शुद्ध ग्रंथ इन महात्मा का और दूसरा मसाला इनका जीवन चरित्र लिखने के लिये मौजूद था।

संपादक

स्वर्गवासी रायबहादुर बालेश्वर प्रसाद साहब

सूची शब्दों की

——:०:——

शब्द	पृष्ठ
अ	
अजब फकीरी	७५
अर्ज सुनो जगदीस	४२
अनहद शब्द अपार	३५
अपना हरि बिन	६६
अबकी तारि देव	४३
अब जग फंद छोड़ावो	४३
अब तुम करो	४२
अरे नर क्या भूतन	५१
अरे नर पर नारी	२०
अरे ले गुरु के बचन	६०
अँखियाँ गुरु दरसन	१२
आ	
आतम ज्ञान बिना	५२
आवो साधो हिलि मिलि	६८
ऐ	
ऐसा ही दुरवेस हो	७५
ऐसी ओ जुगत जानै	४०
क	
क्या दिखलावे सान	६७
करते अनहद ध्यान	३६
करि ले प्रभु सूँ नहेरा	६५
करौ नर हरि भक्तन	१०
ग	
गुमराही छोड़ दिवाने	८०
गुरु को तजि	६
गुरुदेव हमारे आवो जी	४६
गुरु बिन और न	५
गुरु बिन ज्ञान नाहि	४६
गुरुमुख यह जग	६९
घ	
घट घट में रमता	५२
घट में खेलि ले	४९
घट में तीरथ क्यों	४७
घट में तीरथ यों	३८
घरी दो में मेला बिछुरे	७८
च	
चारि चरन सूँ हरिजन	५५
चेतौ रे नर करो बिचार	७८
छ	
छले सब कनक कामिनि रूप	७३
छत्र फिरत नित रहत	३७
छिनभंगी छल रूप	६९
ज	
जहाँ आतम देव अभेव	३८
जहाँ काल नहिं	३७
जहाँ चंद नहि सूर	३७
जानै कोइ संत सुजान	७०
जो नर इकछत भूप	६३
जो नर इत के भये न उत के	४९
त	
तजि के जगत की	७७
तन का तनिक भरोसा नाहीं	७१
तन मथने को जतन	२८
तुम साहब करतार हो	४४
तुम गुन करूँ बखान	४४
तू सदा सोहागिन	३४
थ	
थिर नहिं रहना है	६८
थोथे सुमिरन कहा सरै	५६
द	
दम का नहीं भरोसा रे	७२
दल असंख को कमल	३७
दो दिन का जग में	७६
ध	
धनि वे नर हरिदास	६४
न	
न ऊरधबाहु न अंग भभूति	५३
नवधा भक्ति संभारि	२५
न कोइ संत समान	५७
नौ नाड़ी को खैंचि	३६

शब्द	पृष्ठ
प	
पग तब होवै सुद्ध	५६
पतित उधारन बिरद	४१
परबल इन्द्री जान	२७
प्रभु जी सरन तिहारी	४३
पिंड ब्रह्मण्ड की	३९
ब	
ब्रह्मन सो जो ब्रह्म पिछानै	५२
भ	
भाई रे अवधि बीती जात	८०
भक्ति गरीबी लीजिये	७७
म	
मम पवना बस कीजिये	३८
मन में दीरघ भरे बिकारा	६६
मनुवाँ राम के व्यौपारी	६६
महा मूढ़ अज्ञान	६४
माला तिलक बनाय	५७
मूल कमल में खेलि	३६
मो कूँ कछू न चहिये	४५
मोकूँ भय अति	७९
य	
यह नहिं अपनो देस	७९
या तन को कह गर्ब	७०
र	
राखो जी लाज	४५
रे नर हरि प्रताप	७४
व	
वह करै काग सूँ हंसा	२७
वह देस अटपटा	५३
वह बोलता कित गया	७२
वह राजा सो	६१
स	
सतगुरु निज पुर	३८
सतगुरु पाँचौ भूत उतारो	४६
सतगुरु भौसागर डर	४१
सब जग भर्म भुलाना	५०
सब जातिन में हरिजन प्यारे	५५
समझो रे भाई लोगो	७३
साधू पैज गहै	५८
साधौ घूँघट भर्म	४७
साधौ चलो तुम सँभारी	४८
साधौ जो पकरी सो पकरी	६१
साधौ टेक गई जा को	६०
साधौ टेक हमारी ऐसी	५९
साधौ नवधा भक्ति	२६
साधौ भक्ति नफा	७४
साधौ भरमा यह संसारा	५१
सुधि बुधि सब	१२
सुनु राम भक्ति	५४
सोई जन सूर	६२
सोई सोहागिन नारि	३४
सो नैना मोरे	३९
सो मेरो कहो मान रे	७६
ह	
हमारे चरन कँवल	५७
हमारे राम नाम की टेक	५९
हमारे राम भक्ति	६७
हमारो नैना दरस पियासा	१२
त्र	
त्रिकुटी में तीरथ	५३

चरनदास जी का संक्षेप जीवन चरित्र और उनकी गति की महिमा और सब संतों और साधों के मूल तत्व (उसूल)की एकता का वर्णन ।

—:०:—

गुरु चरनदास जी का जन्म राजपूताना के मेवात देश के डेहरा नामी गाँव में एक प्रसिद्ध ढूसर कुल में हुआ था, जन्म का दिन भादों सुदी ३ मंगलवार सम्बत् १७६० विक्रमी मुताबिक सन् १७०३ ईसवी के था और ७६ बरस की उमर तक प्रेमाभक्ति का सदावर्त चलाकर सम्बत् १८३९ में दिल्ली में चोला छोड़ा जहाँ उनका स्थान अब तक बना हुआ है। यह ७६ बरस का समय बड़े तखड़ पखड़ और उखाड़ पछाड़ का था जो कि साध या संत के विराजमान होने का एक लक्षण है। सन् १७०७ अर्थात् इनके प्रकट होने के चार बरस पीछे तक औरङ्गजेब दिल्ली के तख्त पर था और इस जालिम बादशाह की दारुण पीड़ा और मरहठों के साथ घोर संग्राम का हाल इतिहास से जाना जा सकता है। उसके मरने पर बहादुरशाह का तख्त पर बैठना और पाँच बरस तक उसकी सिक्खों के साथ लगातार लड़ाइयाँ भी प्रसिद्ध हैं। फिर सन् १७१२ और १७१९ के बीच में तीन बादशाह हुए और सन् १७१९ में मुगल खानदान फिर गद्दी पर आया और मुहम्मद शाह का निपुंसक राज शुरू हुआ जो मरता जीता सन् १७४८ तक सिसकता रहा। इसी बादशाहत में सन् १७३६ में नादिरशाह का हमला हुआ जिसने लूट मार कर लोहू का नदी बहा दी और कितने देशों को भिखमंगा बना दिया और स्त्रियों की हुर्मत ली। १७४८ से ५४ तक अहमदशाह का राज रहा और उसके पीछे आलमगीर सानी पाँच बरस तक गद्दी पर था और सन् १७५९ में शाहआलम बादशाह हुआ जो चरनदास जी के गुप्त होने के समय तक नाम मात्र को राज करता रहा। इसके जमाने में अबदालियों की चढ़ाई और पानीपत की लड़ाई हुई। अंगरेजों अर्थात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार की दृढ़ता इसी के समय में हुई और सन् १७७४ से १७८५ तक प्रतापी लाट वारन् हेस्टिंग्ज हिन्दुस्तान का गवर्नर जनरल रहा।

यह सब तवारीखी हाल है और इनके लिखने का इतना ही अभिप्राय है कि चरनदास जी के समय में हिन्दुस्तानियों की पूरी गढ़त हुई और उनका बल तोड़ कर परमार्थ में लगने की थोड़ी बहुत योग्यता पैदा की गई।

चरनदास जी का घरऊ नाम रनजीतसिंह, उनके पिता का नाम मुरलीधर और माता का कुंजो था। जब यह सात बरस के थे एक दिन इनके पिता जंगल में गये (जैसा कि वह कभी-कभी सुमिरन ध्यान के लिये जाया करते थे) और फिर वहाँ से न लौटे। घर वालों ने बहुत खोज की पर सिवाय उनके कपड़ों के जो जंगल में एक जगह रक्खे मिले और कुछ पता न चला। तब चरनदासजी को उनकी माँ के साथ उनके नाना जो दिल्ली में रहते थे अपने घर ले आये।

चरनदास जी को बालपन ही से परमार्थ का चाव था। लिखा है कि १९ बरस की अवस्था में इनको जंगल में जहाँ यह भगवंत के बिरह में व्याकुल होकर रो रहे थे शुकदेव मुनि मिले और शब्द मार्ग का उपदेश दिया। चरनदास जी बारह बरस तक दिल्ली में अभ्यास करते रहे और इसके पीछे लोगों को उपदेश देना आरंभ किया।

उनके निकटवर्ती शिष्य ५२ थे जिनकी बावन गद्दियाँ अलग-अलग आज कल वर्तमान हैं, परंतु इनके गुरुमुख चेले गुसाइं युक्तानन्द जी समझे जाते थे। उनकी चेलियों में सहजो-बाई और दया बाई की भक्ति बड़ी प्रचंड थी जो कि उनकी कोमल और अपूर्व बानी से टपकती है।[1]

चरनदास जी के विषय में बहुत से करामात के कौतुक कहे जाते हैं जो उनके शिष्य रामरूप जी की बनाई हुई "गुरु भक्ति प्रकाश" नामक पोथी में लिखे हैं परंतु उनमें से कोई ऐसे नहीं हैं जिनसे उनकी महिमा ऐसों के चित्त में बढ़े जो साध गति की समर्थता को जानते हैं इसलिए उनको विस्तार के साथ लिखना आवश्यक नहीं तौ भी नमूने की तरह दो तीन लिख दिये जाते हैं। कहा जाता है कि (१) चरनदास जी ने अपनी माँ को साक्षात् भगवान के दर्शन कराये। (२) नादिरशाह ने विरोध से इनको कैद में रक्खा जहाँ से वह गुप्त हो गये। फिर उसने दूसरी बार पकड़वा कर अपने सामने बेड़ी हथकड़ी और तौक डलवा कर कारागार में बंद करके कुंजी दरवाजे के ताले की अपने पास रख ली, रात को चरनदास जी ने नादिरशाह के सोने के कमरे में प्रगट होकर उसके सिर पर लात मारी कि बादशाह काँपने लगा और चरनों पर गिर कर क्षमा माँगी। (३) शाह आलमगीर सानी के मरने की तिथि और घड़ी उन्होंने दो बरस पहले से बता दी थी—इत्यादि।

पर ऐसी करामातें महात्मा चरनदासजी सरीखे भारी गति के पुरुष के लिये महा तुच्छ बात है क्योंकि पूरे साध की अपने भगवन्त से एकता हो जाती है अर्थात् दोनों में कोई भेद नहीं रहता।

सब सच्चे साधों और संतों ने गुरू और नाम की महिमा गाई है और कहा है कि बिना इन दोनों की मुख्यता किये किसी साधन से जीव का पूरा उद्धार नहीं हो सकता। उन सब का मार्ग एक है अर्थात् शब्द अभ्यास, क्योंकि "गुरू" से उनका अभिप्राय शब्द अभ्यासी और शब्द सरूपी गुरू से है चाहे वह किसी पंथ और जात में हों और "नाम" का मतलब धुन्यात्मक नाम है जिसकी धुनि आप से आप घट घट के ऊँचे देश में हो रही है। चरनदास जी पूरे साध गुरू थे जैसा कि इस पुस्तक के सारांश निरूपन अंग के शब्दों को समझ कर पढ़ने से बिदित होता है। वहाँ कहा है कि सतगुरु वही है जो शब्द की चोट करता है और नाम वह है जो लिखने पढ़ने और बोलने में नहीं आता है अर्थात् धुन्यात्मक नाम; परंतु इस भेद को उनके अनुयाइयों में से भी बिरले समझते हैं। यही हाल कबीर साहब, गुरु नानक, पलटू साहब, जगजीवन साहब, दरिया साहब और दूसरे महात्माओं के मतों का है। पर याद रखना चाहिये कि उनके चलाने वाले महापुरुष और महात्मा थे और जो एक मत के अनुयायी दूसरे मत के आदि आचार्य या उस मत की निंदा करते हैं वह अनसमझता से मानो अपने आचार्य और अपने मत की निंदा करते हैं और अपने को महा पातकी बनाते हैं।

यह सलाह उन लोगों के हित के लिये है जो साधों या संतों के पथ में हैं निरे पंडितों और विद्वानों के लिये नहीं है जिनकी आँखों पर ऊँची जाति और विद्या बुद्धि के अहंकार का परदा पड़ा हुआ है। यह बेचारे क्या करें क्योंकि सब साधों और संतों ने जाति पाँति, करम भरम, मूरत पूजा और शास्त्रों की बाहरमुखी करतूत का निषेध जोर देकर किया है जिससे न केवल इनके जाति अभिमान पर चोट लगती है वरन जीविका में भी खलल पड़ता है इसलिये वह विरोध के घाट पर आ बैठते हैं।

---

(१) सहजो बाई और दया बाई की बानी हम छाप चुके हैं।

चरनदास जी ने भी और साधों संतों की तरह बाहरी कार्रवाई और अटक भटक का खंडन किया है और यद्यपि बानी में जोग बैराग ज्ञान आदिक सब साधन कहे हैं परन्तु सिद्धांत में नाम और गुरु भक्ति ही को सब से ऊँचा रक्खा है और इसका इशारा अपनी बानी के समाप्त की चौपाई में किया है—

अद्भुत ग्रंथ महा सुख दाई। ता की महिमा कही न जाई॥
ता में जोग ज्ञान बरागा। प्रेम भक्ति जा में अनुरागा॥
निर्गुन सर्गुन सबही कहिया। फिर गुरु चरन कमल में रहिया॥
जो कोइ पढ़ि पढ़ि अर्थ बिचारे। आप तरै औरन को तारै॥

नीचे लिखी हुई कड़ियों में चरनदास जी ने बेद, पुरान, देवताओं की पूजा, तीरथ, बरत, करम भरम, इत्यादि की असल हैसियत दिखला कर गुरु भक्ति और नाम को दृढ़ाया है—

शब्दों की कड़ियाँ

छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी। ब्रह्मा सेस महेसर छर ही छर ही त्रैगुन माया। छर ही सहित लिये औतारा छर ह्वाँ तक जहँ माया। चरनदास सुकदेव बतावैं निःअच्छर है सब सूँ न्यारा।	भेद बानी अंग का शब्द ९
सब जग पाँच तत्त का उपासी। परम तत्व पाँचौ से आगे गुरु सुकदेव बखानें।	भेद बानी अंग का शब्द ३
बिरंच महादेव से मीन बहुतै जहाँ होयं परगट कभी गोत मारा। तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं गुरु दई दृष्टि जा सूँ निहारा।	भेद बानी अंग का शब्द १३
किरिया कर्म भर्म उरझे रे ये माया के भटके। ज्ञान ध्यान दोउ पहुँचत नाहीं राम रहीमा फटके। जग कुल रीत लोक मरजादा मानत नाहीं हटके।	अनहद शब्द की महिमा के अंग का शब्द १२
साधो घूँघट भर्म उठाय होली खेलिये। बेद पुरान लाज तजिबे री इन में ना उरझैये।	करम भरम के निषेध अंग का शब्द २
गुरु दूती बिन सखी पीव न देखो जाय। भावैं तुम जप तप करि देखो भावैं तीरथ न्हाय। बेद पुरान सबै जो ढूँढ़े स्रुति इस्मृति सब धाय। आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहि भरमाय।	भेद बानी अंग का शब्द १

———

अंगों का सूचीपत्र

नाम अंग और उसके आधीन विषय	पृष्ठ
सतगुरु महिमा	१-६
गुरु महिमा	१-२
सतगुरु शब्द	२-३
सतगुरु बचन	३
उपदेश गुरु भक्ति	३-४
महिमा गुरु सेवा	५
हरि से गुरु की अधिकता	६-७
कनफूँका गुरु और सतगुरु और शिष्य निर्णय	७-८
भक्तों की महिमा	८-१०
बिरह और प्रेम	१०-१३
मन इंद्री और पाँच विरोधियों के विकार और उनके मोड़ने का उपदेश	१३-२३
मन	१३-१५
इंद्रियों का वर्णन	१६
१ आँख इन्द्री	१७
२ कान इन्द्री	१७
३ जिह्वा इन्द्री	१७-१८
४ त्वचा इन्द्री	१८-१९
५ नासिका इन्द्री	१९

शब्द	पृष्ठ
पाँच बिरोधियों का वर्णन	१९-२५
१ काम	२०
२ क्रोध	२१
३ मोह	२१-२२
४ लोभ	२३
५ अहंकार	२४-२५
नवधा भक्ति का अंग	२५-२७
ज्ञान मत	२७-३०
ज्ञान मार्ग के उपदेशी का निरूपन	२७
ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का उपाय	२७-२८
वाचक ज्ञानी	२९-३०
सुमिरन	३०-३२
सुमिरन बिधि	३१-३२
पतिब्रता का अंग	३३-३५
अनहद शब्द की महिमा और उसकी प्राप्ति का बिलास	३५-४०
बिनती और प्रार्थना	४१-४६
करम भरम का निषेध	४६-५७
सूरमा	५७-६४
चेतावनी	६४-८०

चरनदास जी की बानी

सतगुरु महिमा

गुरु महिमा

॥ दोहा ॥

गुरु समान तिहुँ लोक में, और न दीखै कोय।
नाम लिये पातक नसै, ध्यान किये हरि होय ॥ १ ॥
गुरु ही के परताप सूँ, मिटै जगत की ब्याध।
राग दोष दुख ना रहै, उपजै प्रेम अगाध ॥ २ ॥
गुरु के चरनन में धरो, चित बुध मन हँकार।
जब कुछ आपा ना रहै, उतरै सबही पार ॥ ३ ॥
तुम दाता हम मंगता, श्री सुकदेव दयाल।
भक्ति दई ब्याधा गई, मेटे जग जंजाल ॥ ४ ॥
किसू काम के थे नहीं, कोई न कौड़ी देह।
गुरु सुकदेव कृपा करी, भई अमोलक देह ॥ ५ ॥
को है कोइ न जानता, गिनती में नहिं नाँव।
गुरु सुकदेव कृपा करी, पुजने लागे पाँव ॥ ६ ॥
सीधी पलक न देखते, छूते नाहीं छाँहिं।
गुरु सुकदेव कृपा करी, चरनोदक ले जाहिं ॥ ७ ॥
दूसर के बालक हुते, भक्ति बिना कंगाल।
गुरु सुकदेव कृपा करी, हरिधन किये निहाल ॥ ८ ॥
जा धन कूँ ठग न लगै, धारो[1] सकै न लूट।
चोर चुराय सकै नहीं, गाँठ गिरै नहिं छूट ॥ ९ ॥
बलिहारी गुरु आपने, तन मन सदके[2] जाँव।
जीव ब्रह्म छिन में कियो, पाई भूली ठाँव ॥१०॥

---

(१) धरकार की जात जो प्रायः लुटेरू होते हैं। (२) न्यौछावर।

जब सूँ गुरु किरपा करी, दरसन दीन्हे मोहिं ।
रोम रोम में वै रमे, चरनदास नहिं कोय ॥११॥
जाति बरन कुल मन गया, गया देह अभिमान ।
अपने मुख सूँ क्या कहूँ, जगही करै बखान ॥१२॥

॥ सतगुरु शब्द ॥

सतगुरु मेरा सूरमा, करै शब्द की चोट ।
मारै गोला प्रेम का, ढहै भरम का कोट ॥१३॥
मुख सेती बोलन थका, सुनै थका जो कान ।
पावन सूँ फिरबा थका, सतगुरु मारा बान ॥१४॥
मैं मिरगा[1] गुरु पारधी[2], शब्द लगायो बान ।
चरनदास घायल गिरे, तन मन बीधे प्रान ॥१५॥
शब्द बान मोहिं मारिया, लगी कलेजे माहिं ।
मारि हँसे सुकदेव जी, बाकी छोड़ी नाहिं ॥१६॥
सतगुरु शब्दी तेग[3] है, लागत दो करि देहि ।
पीठ फेरि कायर भजे, सूरा सनमुख लेहि ॥१७॥
सतगुरु शब्दी सेल[4] है, सहै धमूका साध ।
कायर ऊपर जो चलै, तौ जावै बरबाद ॥१८॥
सतगुरु शब्दी तीर है, तन मन कीयो छेद ।
बेदरदी समझै नहीं, बिरही पावै भेद ॥१९॥
सतगुरु शब्दी लागिया, नावक[5] का सा तीर ।
कसकत है निकसत नहीं, होत प्रेम की पीर ॥२०॥
सतगुरु शब्दी बान है, अँग अँग डारे तोड़ ।
प्रेम खेत घायल गिरे, टांका लगै न जोड़ ॥२१॥
सतगुरु शब्दी मारिया, पूरा आया वार[6] ।
प्रेमी जूझै खेत में, लगा न राखा तार ॥२२॥

---

(१) हिरन । (२) शिकारी । (३) तलवार । (४) भाला । (५) गाँसी । (६) घाव ।

ऐसी मारी खैंच कर, लगी वार गइ पार ।
जिनका आपा ना रहा, भये रूप ततसार[1] ॥२३॥
सतगुरु के मारे मुए, बहुरि न उपजै आय ।
चौरासी बंधन छुटैं, हरिपद पहुँचे जाय ॥२४॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सतगुरु के बचनों मुए, धन्य जिन्हों के भाग ।
त्रैगुन[2] ते ऊपर गये, जहाँ दोष नहिं राग ॥२५॥
बचन लगा गुरुदेव का, छुटे राज के ताज[3] ।
हीरा मोती नारि सुत, गज घोड़ा अरु बाज[4] ॥२६॥
बचन लगा गुरु ज्ञान का, रूखे लागे भोग ।
इन्द्रकि पदवी लौं[5] उन्हैं, चरनदास सब रोग ॥२७॥

॥ उपदेश गुरु भक्ति का ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के आगे राखे माथा । कहै पाप दुख मेटो नाथा ॥
मैं आधीन तुम्हारो दासा । देह आपने चरनन बासा ॥
यह तन मन लै भेट चढ़ायो । अपनी इच्छा कुछ न रहायो ॥
जो चाहै सो तुमहीं करो । या भाँडे में जो कुछ भरो ॥
भावै धूप छांह में डारो । भावै बोरो भावै तारो ॥
गुन पौरुष कुछ बुधि नहिं मेरी । सब बिधि सरन गही प्रभु तेरी ॥
मैं चकई अरु तुम कियो डोरा । मैं जो फिरूँ सब तुम्हरे जोरा ॥
मैं अब बैठा नाव तुम्हारी । आसा नदी से करिये पारी ॥२८॥

॥ दोहा ॥

गुरु के आगे जाय करि, ऐसे बोलै बोल ।
कछू कपट राखै नहीं, अरज करै मन खोल ॥२९॥
यह आपा तुम कूँ दिया, जित चाहौ तित राखि ।
चरनदास द्वारे परो, भावै झिड़कौ लाखि ॥३०॥

(१) उसी की तरह । (२) तीन गुणों का मंडल । (३) मुकुट । (४) कर, महसूल । (५) तक ।

॥ चौपाई ॥

रिद्धि सिद्धि फल कछू न चाहूँ। जगत कामना को नहिं लाऊँ॥
और कामना मैं नहिं राखूँ। रसना नाम तुम्हारो भाखूँ॥
चौरासी में बहु दुख पायो। ता ते सरन तिहारी आयो॥
मुक्ति होन की मन में आवै। आवागवन सूँ जीव डरावै॥
प्रेम प्रीति में हिरदा भीजै। यही दान दाता मोहिं दीजै॥
अपना कीजै गहिये बाँहीं। धरिये सिर पर हाथ गुसाईं॥
चरनदास को लेहु उबारे। मैं अंडा तुम सेवनहारे॥३१॥

॥ दोहा ॥

अंडा जब आगे गिरै, तब गुरु लेवैं सेइ।
करैं बराबर आपनो, सिख को निस्सन्देह॥३२॥
अपना करि सेवन करैं, तीन भाँति गुर देव।
पंजा[1] पच्छी कुंज मन, कछुवा दृष्टि जु भेव॥३३॥
जो वै बिछुरैं घड़ी भी, तौ गंदा होइ जाय।
चरनदास यौं कहत हैं, गुरु को राखि रिझाय॥३४॥
पितु सूँ माता सौ गुना, सुत को राखै प्यार।
मन सेती सेवन करै, तन सूँ डाँट अरु गार[2]॥३५॥
माता सूँ हरि सौ गुना, जिन से सौ गुरुदेव।
प्यार करैं औगुन हरैं, चरनदास सुकदेव॥३६॥
काँचे भाँडे[3] सूँ रहै, ज्यों कुम्हार को नेह।
भीतर सूँ रच्छा करै, बाहर चोटै देह॥३७॥
दृष्टि पड़ै गुरुदेव की, देखत करैं निहाल।
औरै मति पलटैं तबै, कागा होत मराल[4]॥३८॥
दया होय गुरुदेव की, भजै[5] मान अरु मैन[6]।
भोग बासना सब छुटै, पावै अति ही चैन॥३९॥
जब सतगुरु किरपा करैं, खोलि दिखावैं नैन।
जग झूठा दीखन लगै, देह परे की सैन[7]॥४०॥

---

(१) साधारन चिड़िया अपने अंडे को पंखा रख कर सेती है, कंज चिड़िया मन यानी ध्यान से, और कछुआ दृष्टि से। (२) गाली। (३) बरतन। (४) हंस। (५) भागै। (६) काम। (७) दूर का इशारा जो भ्रम सा मालूम होता है।

॥ अष्टपदी ॥

गुरु बिन और न जान मान मेरो कहो।
चरनदास उपदेस बिचारत ही रहो॥
बेद रूप गुरु होहिं कि कथा सुनावहीं।
पंडित को धरि रूप कि अर्थ बतावहीं॥
कल्पबृच्छ गुरुदेव मनोरथ सब सरैं।
कामधेन गुरुदेव छुधा तृस्ना हरैं॥
गुरु हीं सेस महेस तोहि चेतन करैं।
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु होय खाली भरैं॥
गंगा सम गुरु होय पाप सब धोवहीं।
सूरज सम गुरु होय तिमिर हरि[1] लेवहीं॥
गुरु ही को करि ध्यान नाम गुरु को जपौ।
आपा दीजै भेंट पुजन गुरु ही थपौ॥
समरथ श्री सुकदेव कहा महिमा करौं।
अस्तुति कही न जाय सीस चरनन धरौं॥४१॥

॥ महिमा गुरु सेवा ॥

॥ दोहा ॥

हरि सेवा कृत सौ बरस, गुरु सेवा पल चार।
तौ भी नहीं बराबरी, बेदन कियो बिचार॥४२॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की सेवा साधू जानै। गुरु सेवा कहा मूढ़ पिछानै॥
गुरु सेवा सबहुन पर भारी। समझ करो सोई नर नारी॥
गुरु सेवा सूँ बिघन बिनासै। दुरमति भाजे पातक नासै॥
गुरु सेवा चौरासी छूटै। आवागवन का डोरा टूटै॥
गुरु सेवा सूँ प्रेम प्रकासै। उनमत होय मिटै जग आसै॥
गुरु सेवा परमातम दरसै। तिरगुन तज चौथा पद परसै॥
श्री सुकदेव बतायो भेवा। चरनदास कर गुरु की सेवा॥

(१) खींच।

जोग दान जप तीरथ नाना । गुरु सेवा बिन निरफल जाना ॥
गुरु सेवा बिन बहु पछितैहौ । फिर फिर जम के द्वारे जैहौ ॥
गुरु सेवा बिन कौन उतारै । भव सागर सूँ बाहर डारै ॥
गुरु सेवा बिन जड़ का करिहै । का की नाव बैठ कर तरिहै ॥
गुरु सेवा बिन कछु नहिं सरिहै । महा अंध कूपन में परिहै ॥
गुरु सेवा बिन घट अँधियारा । कैसे प्रगटै ज्ञान उजारा ॥
नरक निवारन श्री सुकदेवा । चरनदास करि तिन की सेवा॥४३॥

॥ हरि से गुरु की अधिकता ॥

॥ दोहा ॥

हरि रूठैं कुछ डर नहीं, तू भी दे छुटकाय ।
गुरु को राखौ सीस पर, सब बिधि करैं सहाय ॥४४॥

॥ अष्टपदी ॥

गुरु को तजि हरि सेव कभी नहिं कीजिये ।
बेमुख को नहिं ठौर नरक में दीजिये ॥
गुरु निंदक नहिं मुक्ति गर्भ फिरि आवई ।
चौरासी लख भुक्ति महा दुख पावई ॥
प्रथम करै गुरु देख परखि चरनौं पड़ै ।
उनकी धारन ध्यान टेक उर में धरै ॥
गुरु को रामहि जान कृस्न सम जानिये ।
गुरु नरसिंह औतार जो बावन मानिये ॥
गुरु को पूरन जान जो ईस्वर रूपही ।
सब कुछ गुरु को जान यह बात अनूपही ॥
हरि गुरु एकहि जान यह निस्चय लाइये ।
दुबिधा ही को बोझ जु बेगि बगाइये ॥
धर्म पिता गुरु जान जु दृढ़ता राखिये ।
लाज सकुच करि कान[1] ढीठता नाखिये[2] ॥

(१) शर्म । (२) न धारो ।

मेरा यह उपदेस हिये में धारियो ।
गुरु चरनन मन राखि सेव तन गारियो[1] ॥
जो गुरु झिड़कैं लाख तौ मुख नहिं मोड़ियो ।
गुरु से नेह लगाय सबन सों तोड़ियो ॥
जो सिष साँचा होय तौ आपा दीजियो ।
चरनदास की सीख समझ कर लीजियो ॥
मो को श्री सुकदेव यही समझाइया ।
बेद पुरानन माहिं जो यों हीं गाइया ॥४५॥

॥ जगतगुरु, सतगुरु और शिष्य निर्णय ॥

॥ कनफूँका गुरु ॥

॥ दोहा ॥

कनफूँका गुरु जगत का, राम मिलावन और ।
सो सतगुरु को जानिये, मुक्ति दिखावन ठौर ॥४६॥
गलिया रे[2] गुरु फिरत हैं, घर घर कंठी देत ।
और काज उनकूँ नहीं, द्रव्य कमावन हेत ॥४७॥
गुरु मिलते ऐसे कहैं, कछू लाय मोहिं देहु ।
सतगुरु मिल ऐसे कहैं, नाम धनी का लेहु ॥४८॥

॥ सतगुरु ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु डंका देत हैं, भक्ति धनी की लेहु ।
पहिले हम कूँ भेंटही, सीस आपनो देहु ॥४९॥
ऐसा सतगुरु कीजिये, जीवत डारै मारि ।
जन्म जन्म की बासना, ताकूँ देवै जारि ॥५०॥
भरम निवारन भय हरन, दूर करन संदेह ।
सोता खोलै प्रेम का, सो सम गुरु करि लेहि ॥५१॥
सतगुरु के लच्छन कहै, ताकूँ ले पहिचान ।
निरखि परखि करि दीजिये, तन मन धन अरु प्रान ॥५२॥

---

(१) बहा देना । (२) गली गली ।

॥ शिष्य ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु ढूँढ़ा पाइये, नहीं सुहेला[1] होय ।
सिष भी पूरा कोइ हो, सानी[2] माटी जोय ॥५३॥
जाति बरनकुल आस्रम, मान बड़ाई खोय ।
जब सतगुरु के पग लगै, साँच सिष्य ह्वै सोय ॥५४॥

॥ भक्तों की महिमा ॥

॥ दोहा ॥

भक्तों की अस्तुति किये, तन मन हिया सिराय ।
कलि का मैल रहै नहीं, बुधि उज्जल हो जाय ॥ १ ॥
साधन की सेवा करो, चरनदास चित लाय ।
जन्म मरन बंधन कटै, जगत ब्याधि छुटि जाय ॥ २ ॥
भक्तन की पदवी बड़ी, इन्द्रहुँ सूँ अधिकाय ।
तीन लोक के सुख तजे, लीन्हेव हरि अपनाय ॥ ३ ॥
अनन भक्ति निहकाम जो, करै चरन सोइ दास ।
चार मुक्ति बैकुंठ लौं, सब से रहै निरास ॥ ४ ॥
प्रभु अपने मुख सूँ कहेव, साधू मेरी देह ।
उनके चरनन की मुझे, प्यारी लागै खेह[3] ॥ ५ ॥
आठ सिद्धि वे लें नहीं, कनक कामिनी नाहिं ।
मेरे संग लागे रहैं, कभी न छोड़ैं बाँहि ॥ ६ ॥
साध हमारी आतमा, सब से प्यारे मोहिं ।
नारद निस्चै कीजिये, साँच कहत हूँ तोहिं ॥ ७ ॥
प्रेमी को रिनिया[4] रहूँ, यही हमारो सूल[5] ।
चारि मुक्ति दइ ब्याज में, दै न सकूँ अब मूल[6] ॥ ८ ॥
सर्बस दीन्हो भक्त को, देख हमारो नेह ।
निर्गुन से सर्गुन भयो, धरी पसू की देह[7] ॥ ९ ॥

---

(१) सहज । (२) सभी हुई । (३) खाक या धूल । (४) करजदार । (५) उसूल, प्रण ।
(६) असल । (७) प्रहलाद भक्त की रक्षा को भगवान ने नरसिंह का अवतार धरा ।

मेरे जन मो में रहैं, मैं भक्तन के माहिं[1]।
मेरे अरु मम संत के, कुछ भी अंतर नाहिं ॥१०॥
साध सोवैं तहँ सो रहूँ, भोजन संगहिं जेंव[2]।
जो वह गावैं प्रेम सूँ, मैं हूँ ताली देंव ॥११॥
मम भक्ता जित जित फिरैं, गोहने[3] लागा जाँव।
जहाँ तहाँ रच्छा करौं, भक्तबछल मेरो नाँव ॥१२॥
भक्त हमारो पग धरै, तहाँ धरूँ मैं हाथ।
लारे[4] लागो ही फिरूँ, कबहु न छोड़ूँ साथ ॥१३॥
मोकों बस कियो जो चहै, भक्तन की करि सेव।
उन में ह्वै कर मैं मिलूँ, करूँ बहुत ही हेव ॥१४॥
प्रिथवी पावन[5] होत है, सबही तीरथ आदि।
चरनदास हरि यौं कहैं, चरन धरैं जहँ साध ॥१५॥
जिनकी महिमा प्रभु करैं, अपने मुख सूँ भाखि।
तिन की कौन बराबरी, बेद भरतु हैं साखि[6] ॥१६॥
जिनकी आसा करतु हैं, स्वर्ग माहिं सब देव।
कबहूँ दरसन पाय हैं, चरन कमल की सेव ॥१७॥
अपने अपने लोक में, सभी करैं उत्साह।
साधू काया छोड़ कर, गवन करै किस राह ॥१८॥
धन नगरी धन देस है, धन पुर पट्टन[7] गाँव।
जहँ साधू जन उपजियो, ताकी बलि बलि जावँ ॥१९॥
भक्त जो आवै जगत में, परमारथ के हेत।
आप तरै तारै परा[8], मंडै भजन के खेत ॥२०॥
भवसागर सूँ तारिकर, ले जावै बहु जीव।
साधू केवट राम का, पार मिलावै पीव ॥२१॥

---

(१) हृदय। (२) खाता हूँ। (३) साथ। (४) प्यार। (५) पवित्र। (६) गवाही।
(७) शहर। (८) सफ़।

साधू महिमा को कहे, सोभा अधिक अपार ।
रसना दोय हजार[1] से, सेषहु जावैं हार ॥२२॥
तप के बरस हजार हों, सत संगति घड़ि एक ।
तौ भी सरवरि[2] ना करैं, सुकदेव किया बिवेक ॥२३॥
ऊँची पदवी साधु की, महिमा कही न जाय ।
सुर नर मुनि जग भूपही, देखत रहे लजाय ॥२४॥

॥ राग सारंग ॥

करौ नर हरि भक्तन को संग ।
दुख बिसरै सुख होय घनेरो तन मन उलटै अंग ॥
ह्वै निःकाम मिलो संतन सूँ नाम पदारथ मंग[3] ।
जेहि पाये सब पातक नासैं उपजै ज्ञान तरंग ॥
जो वै दया करैं तेरे पर प्रेम पिलावैं भंग ।
जाके अमल दरसहो हरि को नैनन आवै रंग ॥
उनके चरन सरनहीं लागो सेवा करो उमंग ।
चरनदास तिनके पग परसन आस करत हैं गंग ॥ २ ॥

——: ० :——

॥ बिरह और प्रेम ॥

॥ चौपाई ॥

सब मत अधिकी प्रेम बतावैं । जोग जुगत सूँ बड़ा दिखावैं ॥
प्रेमहि सूँ उपजै बैराग । प्रेमहिं सूँ उपजै मन त्याग ॥
प्रेम भक्ति सूँ उपजै ज्ञाना । होय चाँदना मिट अज्ञाना ॥
दुरलभ प्रेम जु हाथ न आवै । हरि किरपा कर दें तो पावै ॥
प्रेम प्रीत के बस भगवाना । सकल सास्तर कियो बखाना ॥
भक्त हिये में प्रेम जो जागै । तौ हरि दरसत रहैं जो आगे ॥
सकल सिरोमनि प्रेमहिं जानो । चरनदास निस्चै मन आनो॥१॥

---

(१) शेषनाग के हज़ार जबान हैं अगर दो हज़ार हो जायँ तौभी साधु महिमा न कर सकै । (२) बराबरी । (३) माँगो ।

॥ दोहा ॥

प्रेम बराबर जोग ना, प्रेम बराबर ज्ञान ।
प्रेम भक्ति बिन साधिबो, सबही थोथा ध्यान ॥ २ ॥
प्रेम छुटावे जक्त सूँ, प्रेम मिलावै राम ।
प्रेम करै गति और हीं, ले पहुँचै हरि धाम ॥ ३ ॥
प्रेमी जन हरि आप हो, आपा निकसै नाहिं[1] ।
गुरु सुकदेव दिखावई, समझ देखि मन माहिं ॥ ४ ॥
हिरदै माहीं प्रेम जो, नैनों झलकै आय ।
सोइ छका हरि रस पगा, वा पग परसो धाय ॥ ५ ॥
गद गद बानी कंठ में, आँसू टपकै नैन ।
वह तो बिरहिन राम की, तलफत है दिन रैन ॥ ६ ॥
हाय हाय करि कब मिलैं, छाती फाटी जाय ।
ऐसा दिन कब होयगा, दरसन करौं अघाय ॥ ७ ॥
बिन दरसन कल ना पड़ै, मनुआँ धरै न धीर ।
चरनदास की राम बिन, कौन मिटावै पीर ॥ ८ ॥
पीव बिना तौ जीवना, जग में भारी जान ।
पिया मिलैं तो जीवना, नहीं तो छूटै प्रान ॥ ९ ॥
मुख पियरो सूखे अधर[2], आँखें खरी उदास ।
आह जो निकसै दुख भरी, गहिरे लेत उसास[3] ॥१०॥
वह बिरहिन बौरी भई, जानत ना कोइ भेद ।
अगिन बरै हियरा जरै, भये कलेजे छेद ॥११॥
अपने बस वह ना रही, फँसी बिरह के जाल ।
चरनदास रोवत रहै, सुमिर सुमिर गुन ख्याल॥१२॥
वा तन को बिरहा लगो, ज्यों घुन लागो दार ।
दिन दिन पीरी होत है, पिया न बूझै सार ॥१३॥
वे नहिं बूझैं सार ही, बिरहिन कौन हवाल ।
जब सुधि आवै लाल की, चुभत कलेजे भाल[4] ॥१४॥

(१) आपा का निशान बाक़ी नहीं रहता । (२) होठ । (३) सांस । (४) काँटा ।

पीव चहौ कै मत चहौ, वह तौ पी की दास।
पिय के रंग राती रहै, जग सूँ होय उदास ॥१५॥
पी पी करते दिन गया, रैनि गई पिय ध्यान।
बिरहिन के सहजै सधै, भक्ति जोग अरु ज्ञान ॥१६॥
बिरहिन एकै राम बिन, और न कोई मीत।
आठ पहर साठौ[1] घड़ी, पिया मिलन की चीत ॥१७॥
जाप करै तौ पीव का, ध्यान करै तौ पीव।
पिव बिरहिन का जीव है, जिव बिरहिन का पीव ॥१८॥

॥ राग बिहागरा ॥

सुधि बुधि सब गइ खोय री मैं इस्क दिवानी।
तलफत हूँ दिन रैन ज्यों मछली बिन पानी ॥
बिन देखे मोहिं कल न परत है देखत आँख सिरानी[2]।
सुधि आये हिय में दव[3] लागै नैनन बरखत पानी ॥
जैसे चकोर रटत चंदा को जैसे पपिहा स्वाँती।
ऐसे हम तलफत पिय दरसन बिरहबिथा यहि भाँती ॥
जब ते मीत बिछोहा हूवा तब ते कछु न सुहानी।
अंग अंग अकुलात सखी री रोम रोम मुरझानी ॥
बिन मनमोहन भवन अंधेरो भरि भरि आवै छाती।
चरनदास सुकदेव मिलावो नैन भये मोहिं घाती[4] ॥१६॥

॥ राग सोरठ ॥

हमारो नैना दरस पियासा हो।
तन गयो सूखि हाय हिये बाढ़ी जीवत हूँ वहि आसा हो ॥
बिछुरन थारो[5] मरन हमारो मुख में चलै न ग्रासा[6] हो ॥
नींद न आवै रैनि बिहावै[7] तारे गिनत अकासा हो ॥
भये कठोर दरस नहिं जानै तुमकूँ नेक न साँसा[8] हो ॥
हमरी गति दिन दिन औरै ही बिरह बियोग उदासा हो ॥

---

(१) चौसठ। (२) सीतल हुई। (३) आग। (४) दुखदाई। (५) तेरा। (६) लुकमा या कौर। (७) बीतती है। (८) फुरसत।

सुकदेव पिया रे मत रहु न्या रे आनि करो उर बासा हो ।
रनजीता[1] अपनो करि जानी निज करि चरनन दासा हो ॥२०॥

॥ राग सोरठ ॥

अँखियाँ गुरु दरसन की प्यासी ।
इकटक लागी पंथ निहारूँ तन सूँ भई उदासी ॥
रैन दिना मोहिं चैन नहीं है चिन्ता अधिक सतावै ।
तलफत रहूँ कल्पना भारी निस्चल बुधि नहिं आवै ॥
तन गयो सूख हूक[2] अति लागी हिरदे पावक बाढ़ी ।
खिन में लेटी खिन में बैठी घर अंगना खिन ठाढ़ी ॥
भीतर बाहर संग सहेली बातन ही समझावैं ।
चरनदास सुकदेव पिया रे नैनन ना दरसावैं ॥२१॥

॥ मन, इन्द्री और पाँच बिरोधियों के विकार और उनके मोड़ने का उपदेश ॥

॥ दोहा ॥

बहु बैरी घट में बसैं, तू नहिं जीतत कोय ।
निस दिन घेरे ही रहैं, छुटकारा नहिं होय ॥ १ ॥
मनही खेलै खेल सब, मन ही कर अभिमान ।
मन हीह जग ह्वै रहेव, अब सुन मन का ज्ञान ॥ २ ॥

॥ मन ॥

बहु रूपी बहु तरंग यह, बहु तरंग बहु चाव ।
बहुत भाँति संसार में, करि करि घने उपाव ॥ ३ ॥
आवै क्रोध तरंग जब, होत जुबा[3] के रूप ।
काम लहर कबहूँ उठै, ताको होत सरूप ॥ ४ ॥
लोभ कामना जब उठै, जभी लोभ रंग होय ।
मोह कल्पना के उठै, मोह बरन होय सोय ॥ ५ ॥
या मन के जाने बिना, होय न कबहूँ साध ।
जक्त बासना ना छुटै, लहै न भेद अगाध ॥ ६ ॥

---

(१) चरनदास जी का माँ बाप का रक्खा हुआ नाम । (२) शूल का दर्द । (३) जबान ।

तैं मन कूँ जाना नहीं, करी न या की सार।
चौरासी छूटी नहीं, उपजा बारम्बार ॥ ७ ॥
मन ने आयु गँवाइया, ज्ञान बुझायो दीव।
करम लगो भरमत फिरो, मिलो न अपने पीव ॥ ८ ॥
दौरि दौरि रस ओर हीं, होय रहा कंगाल।
नातरु आगे भूप था, ऊँचा बड़ा दयाल ॥ ९ ॥
पाँचौ इन्द्री स्वाद में, भयो निपट आधीन।
राज बढ़ाई सब नसी, भयो मूढ़ मतिहीन ॥१०॥
सरकि जाय बिष ओरहीं, बहुरि न आवै हाथ।
भजन माहिं ठहरै नहीं, जो गहि राखूँ नाथ[1] ॥११॥
मन निस्चल आवै नहीं, निकसि निकसि भजि जाय।
चरनदास यों कहत हैं, काहू की न बसाय ॥१२॥
पचि हारे ज्ञानी तपी, रहे बहुत सिर मार।
मन परेत सूँ डर लगै, लै डूबै मँझ धार ॥१३॥
यह मन भूत समान है, दौड़ै दाँत पसार।
बाँस गाड़ि उतरै चढ़ै, सब बल जावै हार ॥१४॥
भजै[2] तो जानिन दीजिये, घेरि घेरि करि लाव।
या मन कूँ परचाय के, ध्यानहिं माहिं लगाव ॥१५॥
और कहूँ बिधि दूसरी, सुनियो चित्त लगाय।
राम नाम मन सूँ जपै, चंचलता थकि जाय ॥१६॥
पवन रुकै जब मन थकै, और दृष्टि ठहराय।
ऐसी साधन साधिये, गुरु गम भेद मिलाय ॥१७॥
इन्द्री रोके मन रुकै, अरु उत्तम बिधि येहु।
चरनदास यों कहत हैं, यह साधन करि लेहु ॥१८॥

---

(१) नकेल। (२) भागै।

इंद्रिन कूँ मन बसि करै, मन कूँ बसि करै पौन ।
अनहद बसि करै बायु कूँ, अनहद कूँ ले तौन ॥१९॥
या कूँ नाम समाधि है, मन ता में ठहराय ।
जन्म जन्म की बासना, ता कूँ दग्ध[1] कराय ॥२०॥
इन्द्री पलटै मन बिषै, मन पलटै बुधि माहिं ।
बुधि पलटै हरि ध्यान में, फेरि होय लय[2] जाहिं ॥२१॥
दग्ध बासना होय जब, आवा गवन नसाय ।
कहैं गुरु सुकदेव जी, मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥२२॥
जगत बासना के तजे, माया कूँ न बसाय ।
कर्म छुटै मिटै जीवता, मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥२३॥
फँसे न इन्द्री स्वाद में, चरन कमल में ध्यान ।
पर आसा कोइ ना रहै, लगै न माया बान ॥२४॥
सब में अधिको ज्ञान है, ता से ऊँचो ध्यान ।
ध्यान मिलावै पीव कूँ, पावै पद निरबान ॥२५॥
ध्याता[3] ध्येय[4] कैसे मिलै, होय न बिच में ध्यान ।
तीनौं एक हुए बिना, लहै न पद निरबान ॥२६॥

॥ चौपाई ॥

मन कूँ सतसंगति लै जावो । कानों हरि जस[5] कथा सुनावो ॥
भाँति भाँति के रँग ललचावै । तौ हरि के रंग क्यों न रँगावै ॥
तौ या को ज्ञानी ही कीजै । जक्त ओर जाने नहिं दीजै ॥
कै दीजे हरि ही कूँ ध्यानू । राम भक्ति में या कूँ सानू ॥
कै कीजे यह जोगी पूरा । याहि सुनावो अनहद तूरा ॥
या मन कूँ कीजे बैरागी । या कूँ कीजे सरबस त्यागी ॥
जग रँग उतरि ब्रह्म रँग लागै । जा ते कर्म भर्म भय भागै ॥
चरनदास सुकदेव बतावैं । मन फेरन की राह दिखावैं ॥२७॥

(१) जलाना । (२) तदरूप । (३) ध्यान करने वाला । (४) जिसका ध्यान करता है ।
(५) महिमा ।

॥ इन्द्रियों का वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रिन के बस मन रहै, मन के बस रहै बुद्ध ।
कहो ध्यान कैसे लगै, ऐसा जहाँ बिरुद्ध ॥२८॥
जित जित इन्द्री जात है, तित मन कूँ ले जात ।
बुधि भी संगहि जात है, यह निस्चय करि बात ॥२९॥
जित इन्द्री मन हूँ गया, रही कहाँ सूँ बुद्धि ।
चरनदास यौं कहत हैं, करि देखो तुम सुद्धि ॥३०॥
इन्द्री मन के बस करै, मन करै बुधि के संग ।
बुधि राखै हरि पद जहाँ, लागै ध्यान अभंग ॥३१॥
इन्द्री मन मिलि होत है, बिषय बासना चाह ।
उपजै जैसे काम हीं, नारी मिलि अरु नाह[1] ॥३२॥
इन्द्रिन सूँ मन जुदा करि, सुरति निरति करि सोध ।
उपजै ना बिष बासना, चरनदास कर बोध ॥३३॥
इन्द्री रोके ते रुकैं, और जतन नहिं कोय ।
मन चंचल रिझवार है, रसिक सवादी होय ॥३४॥
चलौ करै थिर ना रहै, कोटि जतन करि राख ।
यह जबहीं बस होयगा, इन्द्रिन के रसनाख[2] ॥३५॥
न्यारे न्यारे चहत हैं, अपने अपने स्वाद ।
इन पाँचो में प्रीत है, कछु न बाद बिबाद ॥३६॥
दुर्जन के फूटे बिना, तेरी होय न जीत ।
चरनहिदास बिचारि करि, ऐसी कहिये रीत ॥३७॥
जुदी जुदी पाँचौ कहूँ, एक एक का भेद ।
जो कोइ इन कूँ बस करै, सबहीं छूटै खेद ॥३८॥

---

(१) पुरुष । (२) छोड़ दे या भुला दे ।

॥ १ आँख इन्द्री ॥

दीपक त्रिया निहारि करि, गिरै पतंग ज्यों जाय ।
कछू हाथ आवै नहीं, उलटो आप जराय ॥३९॥
ऐसी इन्द्री आँख की, सो अपनी नहिं होय ।
गुरु सुकदेव बतावई, चरनदास सुन लोय ॥४०॥
दरसन कीजे साध का, कै गुरु का कर लोय ।
जहँ तहँ ब्रह्महिं देखिये, दुबिधा दुरमति खोय ॥४१॥
बैरी मिंतर एकसा, एकै रूपक रूप ।
ऐसी होवै दृष्टिहीं, जब समझै मन भूप ॥४२॥

॥ २ कान इन्द्री ॥

॥ दोहा ॥

मन दै सुनिये हरि कथा, सुनिये हरि जस कान ।
ताहि बिचार जो कीजिये, होय भक्ति को ज्ञान ॥४३॥
सुनि सुनि उपजै सुबुधि हीं, लागै हरि को रंग ।
सुनि सुनि उपजै कुबुधि हीं, खोटी उठै तरंग ॥४४॥
ऐसी इन्द्री कान की, जाके जुगल सुभाव ।
कथा कीरतन हीं सुनो, करि करि कोटि उपाव ॥४५॥
बचन सुनो गुरु साध के, मन को लावो मोर ।
बिषय बासना सूँ निकसि, आवै हरि की ओर ॥४६॥
सरवन इन्द्री में कहे, दोनों अंग दिखाय ।
जिह्वा इन्द्री कहत हैं, चरनदास चित लाय ॥४७॥

॥ ३ जिह्वा इन्द्री ॥

॥ दोहा ॥

कुटिल जो इन्द्री जीभ की, चाहै खट रस स्वाद ।
या बस होइ औगुन करै, जन्म जाय बरबाद ॥४८॥

जिह्वा के जीते बिना, गये जन्म सब हार।
चरनदास यों कहत हैं, भये जगत में ख्वार ॥४९॥
बंसी डारी ताल में, मछरी लागी आय।
जिह्वा कारन जिव दियो, तलफ तलफ मरि जाय ॥५०॥
तजा न जिह्वा स्वाद कूँ, वा संग दीन्हे प्रान।
जो कोइ ऐसा जगत में, सो अज्ञानी जान ॥५१॥
या सूँ ले हरि नाम हीं, गुनाबाद हीं भाख।
जो बोले तो साँच हीं, नाहीं मुख में राख ॥५२॥
मीठा बचन उचारिये, नवता[1] सबसूँ बोल।
हिरदय माहिं बिचारि करि, जब मुख बाहर खोल ॥५३॥
बिना स्वाद हीं खाइये, राम भजन के हेत।
चरनदास कहैं सूरमा, ऐसे जीतौ खेत ॥५४॥
जो बोलै तौ हरि कथा, मौन गहै तौ ध्यान।
चरनदास यह धारना, धारै सो सज्ञान ॥५५॥

॥ त्वचा इन्द्री ॥

॥ दोहा ॥

त्वचा सो इन्द्री काम की, नित ही खेलै दाव।
पसु पंछी सुर नर असुर, फँसे आप करि चाव ॥५६॥
त्वचा स्वाद सब बस भये, फँदे जगत के माहिं।
जो कोई निकसो चहै, सो भी निकसै नाहिं ॥५७॥
धोखे की हथनी लखी, आयो गज ललचाय।
खंदक माहीं रुकि गयो, सीस धुनै पछिताय ॥५८॥
जंगल में आनन्द सूँ, बहुतै केलि कराय।
अब तौ द्वारे भूप के, परो बंध में आय ॥५९॥
ऐसे ही ये नर फँदो, देखि कामिनी रूप।
जन्म गँवायो दुख भरो, पड़ो अबिद्या कूप ॥६०॥

(१) आधीनता से।

करी न हरि की भक्ति हीं, गुरु सेवा तजि दीन्ह ।
सुनी न हरि की गुन कथा, सत संगति नहिं कीन्ह ॥६१॥
फिरि ऐसो कब होयगो, पावै मानुष देह ।
अब तौ चौरासी बिषै, जाय कियो उन ग्रेह[1] ॥६२॥
जीतौ इन्द्री त्वचा की, कहिया श्री सुकदेव ।
यासे तप ही कीजिये, चरनदास सुन लेव ॥६३॥

॥ ५ नासिका इन्द्री ॥

॥ दोहा ॥

सुगंध और हरखै नहीं, दुरगन्धै न रिसाय ।
ऐसी जीतै नासिका, मन भँवरा ठहराय ॥६४॥
समझन कूँ तुक एक है, भूलन कूँ तुक लाख ।
गुन औगुन इन्द्री कहे, सो तू मन में राख ॥६५॥
जो इन्द्रिन के बसि भयो, बाँधो नरकै जाय ।
चौरासी भरमत फिरै, गर्भ योनि दुख पाय ॥६६॥
जो इन्द्रिन के बसि भयो, पावै ना आनंद ।
बार बार जग माहिं हीं, छूटे ना संबंद[2] ॥६७॥
भक्ति माहिं चित ना लगै, सब हीं बिगड़ें काम ।
जो इन्द्रिन के बसि भयो, ता को मिलै न राम ॥६८॥
चरनदास यों कहत हैं, इन्द्री जीतन ठान ।
जग भूलै हरि कूँ मिलै, पावै पद निर्बान ॥६९॥

॥ पाँच बिरोधियों का वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

जोग तपस्या भक्ति, नज्ञकूगाड़नबिपाँच ।
जीवत दुख दें जक्त में, मुए नरक दें आँच ॥७०॥
काम क्रोध मोह लोभ ये, और पाँचवाँ गर्ब ।
राज करैं बसुधा बिषै, इन बस कीन्हे सर्ब ॥७१॥

(१) घर । (२) सम्बन्ध ।

॥ १ काम ॥

॥ चौपाई ॥

यह काम बुरा रे भाई। सब देवै तन बौराई ॥
पंचौं में नाक कटावै। वह जूती मार दिलावे ॥
मुँह काला गधे चढ़ावै। बहु लोग तमासे आवै ॥
झिड़का ज्यों डोले कुत्ता। सब हीं के मन सूँ उत्ता[1] ॥
कोइ नीके मुख नहिं बोलै। सरमिंदा हो जग डोलै ॥
वह जीवत नरक मँझारी। सुन चेतौ नर अरु नारी ॥
काम अंग तजि दीजै। सत संगतिहीं करि लीजै ॥
अस कहैं चरन हीं दासा। हरि भक्तन में कर बासा ॥७२॥

॥ दोहा ॥

तन मन जारै काम हीं, चित कर डावाँडोल।
धरम सरम सब खोय के, रहै आप हिये खोल ॥७३॥
नर नारी सब चेतियो, दीन्हो प्रगट दिखाय।
पर तिरिया पर पुरुस हो, भोग नरक को जाय ॥७४॥

॥ राग सोरठ ॥

अरे नर पर नारी मत तक रे।
जिन जिन ओर[2] तको डायन की, बहुतन कूँ गइ भख रे ॥
दूध आक[3] को पात कटैया[4], झाल अगिन की जान।
सिंह मुछारे बिष कारे को, ऐसे ताहि पिछानो ॥
खानि नरक की अति दुखदाई, चौरासी भरमावै ॥
जनम जनम कूँ दाग लगावै, हरि गुरु तुरत छुटावै ॥
जग में फिरि फिरि महिमा खोवै, राखै तन मन मैला।
चरनदास सुकदेव चितावैं, सुमिरौ राम सुहेला ॥७५॥

॥ दोहा ॥

पर नारी कै आपनी, दोनों बुरी बलाय।
घर बाहर की आग ज्यों, देवै हाथ जलाय ॥७६॥

---

(१) उतरा हुआ। (२) तरफ़। (३) मदार। (४) भटकटैया जो एक काँटेदार झाड़ होती है।

॥ २ क्रोध ॥

॥ दोहा ॥

क्रोध महा चंडाल है, जानत सब कोय।
जाके अंग बरनन करूँ, सुनियो सुरत समोय ॥७७॥
जेहिं घट आवै धूम सूँ, करै बहुत ही ख्वार।
पति खोवै बुधि कूँ हनै, कहा पुरुस कह नार ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

वह बुद्धि भ्रष्ट करि डारै। वह मारहिं मार पुकारै ॥
वह सब तन हिंसा छावै। कहिं दया न रहने पावै ॥
वह गुरु सूँ बोलै बेंड़ा। साधौं सूँ डोले ऐंड़ा ॥
वह हरि सूँ नेह छुटावै। वह नरक माहिं ले जावै ॥
वह आतम घाती जानौ। वह महामूढ़ पहिचानौ ॥
सोंटों की मार दिलावै। कबहूँ कै सीस कटावै ॥
वह नीच कमीना कहिये। ऐसे सूँ डरता रहिये ॥
वह निकट न आवन दीजै। अरु छिमा अंक[1] भरि लीजै ॥
जब छिमा आय कियो थाना। तब सबही क्रोध हिराना ॥
कहैं गुरु सुकदेव खिलारी। सुन चरनदास उपकारी ॥७९॥

॥ ३ मोह ॥

॥ दोहा ॥

मोह बड़ा दुख रूप है, ताकूँ मारि निकास।
प्रीत जगत की छोड़ दे, जब होवै निर्बास ॥८०॥
जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों अंबुज[2] सर[3] माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नहिं ॥८१॥
जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिह्वा मुख माहिं।
घीव घना भच्छन करै, तौभी चिकनी नाहिं ॥८२॥
ऐसा हो जो साध हो, लिये रहै बैराग।
चरन कमल में चित धरै, जग में रहै न पाग ॥८३॥

(१) गोद। (२) कमल। (३) तलाव।

मोह बली सब सूँ अधिक, महिमा कही न जाय।
जा कूँ बाँधो जग सबै, छूटै ना बौराय ॥८४॥
स्वारथ ही के सब सगे, कुटुंब मित्र कुल गोत।
परमारथ समझावहीं, जो दयाल गुरु होत ॥८५॥
परमारथ में दुख मिटे, कलह कल्पना जाय।
स्वारथ माहीं सुख नहीं, तामें चित न लगाय ॥८६॥
स्वारथ में चिन्ता घनी, जो ह्वाँ करिहौ ग्रेह।
बिना आग की चिता में, जीवत जरि है देह ॥८७॥
चिन्ता घट में नागिनी, ताके मुख हैं दोय।
निस दिन खाये जात है, जान सकत नहिं कोय ॥८८॥
जा घट चिन्ता नागिनी, ता मुख जप नहिं होय।
जो टुक आवै याद भी, उहीं जाय फिरि खोय ॥८९॥
चिन्ता ही सूँ लगत है, चरनदास उर आग।
तहाँ ध्यान हरि चरन कूँ, कैसे ही अब लाग ॥९०॥
जक्त बासना के बिषै, घर चिन्ता का जान।
जग की आसा छोड़ि कर, हरि सुमिरन ही ठान ॥९१॥
आसा नदिया में चले, सदा मनोरथ नीर।
परमारथ उपजे बहे, मन नहिं पकरै धीर ॥९२॥
धीर बिना नहिं ध्यान है, निस्चल जप नहिं होय।
जो चाहे हरि भक्ति कूँ, जक्त बासना खोय ॥९३॥
जब लग जग सूँ प्रीति है, तब लग दुक्ख अपार।
भय भारी चिन्ता घनी, भवन पिछानौदार[1] ॥९४॥
जग सूँ छुटि बाहर परै, उसी समय सब चैन।
उपजै आनंद परम हीं, तहँ कुछ लेन न देन ॥९५॥
रहै एक हरि भक्ति हीं, बाधा सब छुटि जाहिं।
जबै राम अपनो करैं, बेगहिं पकरैं बाँहि ॥९६॥

(१) सूली।

॥ ४ लोभ ॥

लोभ नीच बर्नन करूँ, महा पाप की खानि ।
मंत्री जा का झूठ है, बहुत अधर्मी जानि ॥९७॥
तृस्ना जा की जोय[१] है, सो अंधा करि देय ।
घटी बढ़ी सूझै नहीं, नहीं काल का भेय ॥९८॥
दम्भ मकर छल भगल जो, रहत लोभ के संग ।
मुए नरक ले जायँगे, जीवत करैं अतंग[२] ॥९९॥
देहैं धर्म छोड़ाय हो, आन धर्म ले जाय ।
हरि गुरु ते बेमुख करैं, लालच लोभ लगाय ॥१००॥
चहूँ देस भरमत फिरैं, कलह[३] कल्पना साथ ।
लोभ खंभ उठि उठि लगैं, दोऊ पसारे हाथ ॥१०१॥
चींटी बाँदर खगन[४] कूँ, लोभ बहुत दुख दीन ।
या कूँ तजि हरि कूँ भजे, चरनदास परबीन ॥१०२॥
लोभ घटावे मान कूँ, करै जगत आधीन ।
धर्म घटा भिषृल करै, करै बुद्धि को हीन ॥१०३॥
लोभ गये ते आवई, महा बली संतोष ।
त्याग सत्य कूँ संग ले, कलह निवारन सोक ॥१०४॥
घट आवै संतोष ही, काह चहै जग भोग ।
स्वर्ग आदि लौं सुख जिते, सब कूँ जानै रोग ॥१०५॥
संतोषी निर्मल दसा, रहै राम लौ लाय ।
आसन ऊपर दृढ़ रहै, इत उत कूँ नहिं जाय ॥१०६॥
काहू से नहिं राखिये, काहू बिधि की चाह ।
परम संतोषी हूजिये, रहिये बेपरवाह ॥१०७॥
चाह जगत की दास है, हरि अपना न करै ।
चरनदास यों कहत हैं, व्याधा नाहिं टरै ॥१०८॥

---

(१) स्त्री । (२) दुखी, हैरान । (३) लड़ाई । (४) पक्षी । (५) गंदा ।

॥ ५ अहंकार ॥

॥ दोहा ॥

अभिमानी चढ़ि कर गिरे, गये बासना माहिं।
चौरासी भरमत भये, कबहीं निकसैं नाहिं ॥१०९॥
अभिमानी भींजे गये, लूट लिये धन बाम[1]।
निरअभिमानी हो चले, पहुँचे हरि के धाम ॥११०॥
चरनदास यों कहत हैं, सुनियो संत सुजान।
मुक्ति मूल आधीनता, नरक मूल अभिमान ॥१११॥
मन में लाय बिचार कूँ, दीजे गर्ब निकार।
नान्हापन तब आय हैं, छूटे सकल बिकार ॥११२॥

॥ चौपाई ॥

रूपवंत गरबावे। कोइ मो सम[2] दृष्टि न आवे ॥
तरुनापा गर्बाना। वह अंधरा होवै राना ॥
कहै धन मद में परबीना। सब मेरे ही आधीना ॥
कहै कुल अभिमानी सूचा। मैं सब जातिन में ऊँचा ॥
वह बिद्या गर्ब जो भारी। करै बाद बिबाद अनारी ॥
अरु भूप करै अभिमाना। उन आपे हीं कूँ जाना ॥
उन काल नहीं पहिचाना। सो मार करै घमसाना ॥
गुरु सुकदेव चितावैं। तोहि परगट नैन दिखावैं ॥
जम बाँधि पकरि ले जावैं। वै बहुतै त्रास दिखावैं ॥
जब कहाँ जाय अभिमाना। मोर नीका सुन यह ताना ॥
फिर डारे नरक मँझारी। सुन चेतौ नर अरु नारी ॥
तौ मद मत्सर[3] तजि दीजै। साधौ के चरन गहीजै ॥
हरि भक्ति करौ चित लाई। जब सकल ब्याधि छुटि जाई ॥
करि जात बरन कुल दूरा। हो सतसंगति में पूरा ॥

(१) स्त्री, माया। (२) मुझ सा। (३) बिरोध।

जब मुक्ति धाम कूँ पावै। फिर गर्भ जोनि नहिं आवै॥
कहैं गुरु सुकदेव बखानो। यह चरनदास मति आनो॥

॥ दोहा॥

पाँचौ उतरैं भूत जब, ह्वै हौ ब्रह्म अरूप।
आनंद पद को पाइहौ, जित है मुक्ति सरूप॥

॥ चौपाई॥

पाँचौ चोर महा दुखदाई। सो या जग में देहिं फँसाई॥
तन मन कूँ बहु ब्याधि लगावैं। कायक बाचक पाप चढ़ावैं॥
फिर चौरासी माहिं फिरावैं। जठर[1] अगिन में ताहि तपावैं॥
जन्म मरन भारी दुख पावै। मनुष देहि का सर्बस जावै॥
तीन लोक में डोलै हाला। सुर पुर मृत्यु और पाताला॥
कैसे मुक्ति धाम कूँ पावै। जो इन्द्रिन के बस हो जावै॥
छूटै जब गुरु किरपा करैं। चरनदास के सिर कर धरैं॥

॥ नवधा भक्ति[2]॥

॥ अष्टपदी॥

नवधा भक्ति सँभारि अंग नौ जानि ले।
सर्वन चितवन और कीर्तन मानि ले॥
सुमिरन बंदन ध्यान और पूजा करो।
प्रभु सूँ प्रीति लगाय सुरति चरनन धरो॥
होकरि दासहिं भाव साध संगति रलो।
भक्तन की करि सेव यही मति है भलो॥
आपा अर्पन देइ धीर्ज दृढ़ता गहो।
छिमा सील संतोष दया धारे रहो॥
यह जो मैंने कहा बेद का मूल है।
जोग ज्ञान बैराग सबन का फूल है॥

(१) पेट अथवा गर्भ की आग। (२) नौ प्रकार की भक्ति।

प्रेमी भक्त के ताप[1] पात[2] तीनौं नसैं ।
अर्थ धर्म काम मोच्छ सकल ता में बसैं ॥
जो राखै मन माहिं बिबेक बिचार कूँ ।
पावैं पद निर्बान बचै जग भार सूँ ॥
कहैं गुरू सुकदेव मया के भाव सूँ ।
चरनहि दासा होय सुनो बहु चाव सूँ ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ व गौरी व असावरी ॥

साधो नवधा भक्ति करौ रे ।
कलजुग में यह बड़ो पदारथ गहि गहि ताहि तरौ रे ॥
जे जे या सूँ भये सिरोमन तिन के नाम सुनाऊँ ।
बढ़ै कथा बिस्तार कहूँ तो याते सूच्छम गाऊँ ॥
जन प्रहलाद तरो सुमिरन ते बन्दन सूँ अक्रूर ।
चरन कमल की सेवा सेती लछमी रहत हजूर ॥
चन्दन चर्चत हूँ प्रथु राजा उतरो भौजल पार ।
बलि राजा तन अर्पन कीन्हो सदा रहै हरि द्वार ॥
परम दास हनुमंत हुँ उबरो उत्तम पदवी पाई ।
सखा सुभाव तरो है अर्जुन ता की महिमा गाई ॥
मुक्त भयो है परीछित राजा सुन भागवत पुराना ।
श्री सुकदेव मुनी से बक्ता हुए रूप भगवाना ॥
जोग ज्ञान बैराग सबन सूँ प्रेम प्रीति है न्यारी ।
चरनदास ने गुरु किरपा सूँ साँची बात बिचारी ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

नवो अंग के साध ते, उपजै प्रेम अनूप ।
रनजीता यौं जानिये, सब धर्मन का भूप ॥ ३ ॥

---

(१) त्रैताप यानी मन का दुख, देह का दुख और बाहर का दुख लड़ाई झगड़ा वगैरह । (२) त्रैपातक यानी संचित, प्रारब्ध, और क्रियमान कर्म ।

॥ अष्टपदी ॥

वह करै काग सूँ हंसा । इक रहै पिया का संसा ॥
वह जात बरन कुल खोवै । अरु बीज बिरह का बोवै ॥
जो प्रेम तनिक चित आवै । वह औगुन सबै नसावै ॥
प्रेम लता जब लहरै । मन बिना जोग ही ठहरै ॥
कोइ चतुर खिलारी खेलै । वह प्रेम पियाला झेलै[1] ॥
जो धड़ पै सीस न राखै । सोइ प्रेम पियाला चाखै ॥
तन मन सूँ जो बौराई । वह रहै ध्यान लौ लाई ॥
वह पहुँचै हरि के पासा । यों कहैं चरन ही दासा ॥४॥

—: o :—

॥ ज्ञान मति वर्णन ॥

प्रथम ज्ञान मार्ग के उपदेशी का निरूपन

गुप्त महा यह भेद हिये में राखिये ।
जो जड़ मूरख होय तासु नहिं भाखिये ॥१॥
हरि भक्ता अरु गुरुमुखी तप करने की आस ।
सतसंगी साँचा यती ताहि देहु पद दास ॥२॥

॥ ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का उपाय ॥

॥ अष्टपदी ॥

परबल इन्द्री जान सबन कूँ बसि करै ।
सीत उस्न दुख सुख अस्तुति निन्दा हरै ॥
छोड़े ही हंकार बासना आस ही ।
अपने कारन बस्तु रखै नहिं पास ही ॥
पूरी राखै पैज[2] धारना धारि कै ।
गुरु आज्ञा गुरु सेव करै जु बिचारि कै ॥
सकल मनोरथ कामना करै छीन ही ।
ऐसे जिज्ञासू कूँ द्वारे तीन ही ॥

(१) उसके नशे को बरदाश्त कर सकै । (२) टेक ।

एक जो द्वारा त्याग दुजा जो उपाव ही ।
तीजा गुरु की निस्चय ऐसा सुभाव ही ॥
इन द्वारों में राह जो आगे की खुलै ।
लुटै थकै वह नाहिं सुखाला ही चलै ॥
जीवातम जो हंस कहावत है यही ।
या के हैं अस्थान जो तीनों ही सही ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपति परगट जानिये ।
तुरिया निज अस्थान गुप्त पहिचानिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

दूध मध्य ज्यों घीव है, मेहँदी माहीं रंग ।
जतन बिना निकसै नहीं, चरनदास सो ढंग ॥ ४ ॥
जो जानै या भेद कूँ, और करै परवेस ।
सो अबिनासी होत है, छूटै सकल कलेस ॥ ५ ॥

॥ अष्टपदी ॥

तन मथने को जतन कहूँ अब जानिये ।
ज्यों निकसै ततसार बिलोवन ठानिये ॥
पहिले चक्कर जानि मूल[1] द्वारे बिषै ।
जित ही पाँव की एड़ी सूँ बँध दे रेखै ॥
मूल[1] चक्र सों खैंचि अपान चलाइये ।
दूजे चक्कर पास जु आन फिराइये ॥
दहिनी ओर सों तीन लपेटे दीजिये ।
तीजे चक्कर माहिं गमन फिर कीजिये ॥
चौथे चक्कर माहिं पवन जो लाइये ।
बहुरो पँचवें चक्र में जिव पहुँचाइये ॥
षष्टम चक्कर माहिं जु ताहि चढ़ाइये ।
सो त्रिकुटी के मध्य तहाँ ठहराइये ॥

---

(१) गुदा ।

रोके त्रिकुटी माहिं आनि कै बायु कूँ।
षट चक्कर कूँ छेदि चढ़ै जब धाय कूँ॥
अपान बायु चढ़ि जाय वही अस्थान है।
प्रान बायु ह्वै जाय साधु कोइ जान है॥
रोकै प्रानहिं बायु तिरकुटी मध्यहीं।
करै ओं का ध्यान सीस में गद्य[1] हीं॥
यह तौ ऊँचा ध्यान जु अधिक अनूपहीं।
चरनहिं दासा होय जु ब्रह्म सरूपही॥

॥ दोहा ॥

नाम ब्रह्म का है नहीं, है तो वह ओंकार।
जानै आपन को वहीं, मैं हौं तत्व अपार॥ ७॥
जीव ब्रह्म यों होत है, रहै न कछू लगाव।
चरनदास यों कहत हैं, ऐसा किये उपाव॥ ८॥
जो जीवातम सो भया, परमातम अरु ब्रह्म।
वा की सरवरि[2] को करै, पाई परै न गम्म॥ ९॥

॥ चौपाई ॥

जब हो एक दूसरा नासै। बंध मुक्ति की रहै न साँसै॥
मृतक अवस्था जीवत आवै। करम रहित आस्थिर गति पावै॥
जब कोइ मिंतर बैरी नाहीं। पाप पुन्य की परै न छाहीं॥
हरि बिन और पिछान न कोई। तिन के इच्छा रही न दोई॥
ज्ञान दसा ऐसे करि गाई। चरनदास सुकदेव बताई॥१०॥

॥ बाचक ज्ञानी ॥

॥ चौपाई ॥

बाचक ज्ञानी बहुतक देखे। लच्छ ज्ञानी कोइ लेखे लेखे।
ज्ञानी बिगड़े बिषई होई। कथै एक अरु चालै दोई॥
बुरे करम औगुन चित लावै। भले करम गुन सब बिसरावै॥

(१) अंतरंग। (२) बराबरी।

बिषय बासना के रंग रातो । झूठ कपट छल बल मद मातो ॥
इन्द्री बस मन हाथ न आवै । पाप करन सूँ नाहिं डरावै ॥
ज्ञान कथै अरु बाद बढ़ावै । रहनि गहनि का भेद न पावै ॥
ब्रह्म बृत्ति का आवन भारी । चरनदास सुकदेव बिचारी ॥११॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान दसा आवन कठिन, बिरला जानै कोय ।
ज्ञान दसा जब जानिये, जीवत मिर्तक होय ॥१२॥

——: ० :——

॥ सुमिरन का अंग ॥

॥ दोहा ॥

प्रनऊँ श्री सुकदेव कूँ, बानी कहूँ अगाध ।
महिमा गाऊँ नाम की, सब मिलि सुनियो साध ॥ १ ॥
ज्यों की त्यों ही कहत हूँ, कछू न राखूँ भेद ।
निरचै आवै नाम की, छूटैं सब ही खेद ॥ २ ॥
कई बार जो जग करै, जोग करै चित लाय ।
चरनदास कहैं नाम बिन, सभी अफल हो जाय ॥ ३ ॥
आठ धात में गुन नहीं, जो पारस के माहिं ।
तप तीरथ ब्रत साधना, राम नाम सम नाहिं ॥ ४ ॥
ज्यों सेमर का सेवना, ज्यों लोभी का धर्म ।
अन्न बिना भुस कूटना, नाम बिना यों कर्म ॥ ५ ॥
छोड़ै सब ही बासना, हो बैठे निष्काम ।
चरन कमल में चित धरै, सुमिरै रामहिं राम ॥ ६ ॥
ऐसा हो जब साध हो, तब रीझै करतार ।
दरसन दे अपना करै, कभी न छोड़ै लार ॥ ७ ॥
चार बेद किये ब्यास ने, अर्थ बिचार बिचार ।
तामें निकसी भक्ति ही, राम नाम तत सार ॥ ८ ॥
जिन कहिया सुकदेव कूँ, सुनिया प्रेम प्रतीत ।
तिन जग में परगट कियो, जैसी चहिये रीत ॥ ९ ॥

ब्रह्म हत्या अरु नारि की, बालक हत्या होय।
राम नाम जो मन बसै, सब कूँ डारै खोय ॥१०॥
ऐसा ही हरि नाम हीं, मोहिं राम की सौंहि।
जाको होवै परख हीं, सो समझैह्यां लौंहिं ॥११॥
नामहिं ले जल पीजिये, नामहिं लेकर खाह।
नामहिं लेकर बैठिये, नामहिं ले चल राह ॥१२॥
जब लग जागे राम कहु, तन मन सूँ यहि चीत।
चरनदास यों कहत हैं, हरि बिन और न मीत ॥१३॥
तेरा तो कोइ है नहीं, मात पिता सुत नार।
ताते सुमिरौ राम कूँ, हे मन बारम्बार ॥१४॥
जेहि कारन भटकत फिरै, घर घर करत सलाम।
तेरे तो वे हैं नहीं, हे मन सुमिरौ राम ॥१५॥
जीवत ही स्वारथ लगे, मूए देह जराय।
हे मन सुमिरौ राम कूँ, धोखे काहि पराय[1] ॥१६॥
हाथी घोड़े धन घना, चंद्र मुखी बहु नारि।
नाम बिना जम लोक में, पावै दुक्ख अपार ॥१७॥
जब लग जीवै राम कहु, रामहि सेती नेह।
जीव मिलैगो राम में, पड़ी रहैगी देह ॥१८॥
अचरज साधन नाम का, भक्ति जोग का जीव।
जैसे दूध जमाय कै, मथि करि काढ़ा घीव ॥१९॥

॥ सुमिरन बिधि ॥

॥ दोहा ॥

पाँच बरस जप नाभि सूँ, रग रग बोलै राम।
देह जीव निज भक्त ही, पहुँचै हरि के धाम ॥२०॥
त्रिकुटी में जप राम कूँ, जहाँ उजाला होय।
स्वाँसा माहीं जपे ते, दुबिधा रहै न कोय ॥२१॥

---

(१) पड़ा है।

गगन मंडल में जाप करि, जित है दसवाँ द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं, सो पहुँचै हरिद्वार ॥२२॥
नाम उठाकर नाभि सूँ, गगन माहिं ले जाय ।
जहाँ होय परकास हीं, सुकदेव दिया बताय ॥२३॥
मन ही मन में जाप करि, दरपन उज्जल होय ।
दरसन होवै राम का, तिमिर जायँ सब खोय ॥२४॥
सुरत माहिं जो जप करै, तन सूँ न्यारा जौन ।
मिलै सच्चिदानंद में, गहे रहै जो मौन ॥२५॥
सकल सिरोमनि नाम है, सब धरमन के माहिं ।
अनन्य भक्त वह जानिये, सुमिरन भूलै नाहिं ॥२६॥
आनि धरम मानै नहीं, आनि देव नहिं ध्यान ।
ऐसे भक्त अनन्य को, कोई पावै जान ॥२७॥
राम नाम मुख सूँ कहो, राम नाम सुनि कान ।
रोम रोम हरि को रटो, ऐसी गहिये बान[1] ॥२८॥
बिद्या माहीं बाद है, तप के माहीं ऋद्धि ।
राम नाम में मुक्ति है, जोग माहिं यों सिद्धि ॥२९॥
राम नाम में ये सबै, रिद्धि सिद्धि औ मोछ ।
ऐसा इष्ट संभारिये, चरनदास कहि सोछ[2] ॥३०॥
जाका कीया सब बना, सात दीप नौ खंड ।
चरनदास यों कहत हैं, तीन लोक ब्रह्मंड ॥३१॥
तो[3] कारन सब कुछ किया, नाना बिधि सुख दीन्ह ।
तैं वाकूँ जाना नहीं, नाम न कबहूँ लीन्ह ॥३२॥
अबके औसर फिर बन्यो, पाई मानुख देहि ।
चरनदास यों कहत हैं, राम नाम ही लेहि ॥३३॥

——: ० :——

(१) आदत । (२) बिचार के । (३) तेरे ।

।। पतिब्रता का अंग ।।

।। दोहा ।।

पतिब्रता वहि जानिये, आज्ञा करै न भंग ।
पिय अपने के रंग रतै, और न सोहै[1] ढंग ।। १ ।।
अपने पिय कूँ सेइये, आन[2] पुरुष तजि देह ।
पर घर नेह निवारिये, रहिये अपने गेह ।। २ ।।
अज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग ।
तन मन सूँ सेवा करै, और न दूजो रंग ।। ३ ।।
रंग होय तौ पीव को, आन पुरुष बिषरूप ।
छाँह बुरी पर घरन की, अपनी भली जुधूप ।। ४ ।।
अपने घर का दुख भला, पर घर का सुख छार[3] ।
ऐसे जानै कुल बधू, सो सतवंती[4] नार ।। ५ ।।
पति की ओर निहारिये, औरन सूँ क्या काम ।
सबै देवता छोड़ि कै, जपिये हरि का नाम ।। ६ ।।
खसम तुम्हारो राम है, इत उत रुख मत मारि ।
चरनदास यौं कहत हैं, यही धारना धारि ।। ७ ।।
यह सिर नवै तो राम कूँ, नाहीं गिरियो टूट ।
आन देव नहिं परसिये, यह तन जावो छूट ।। ८ ।।
पतिब्रता कूँ ब्रत गहो, बिभिचारिन अंग टार ।
पति पावै सब दुख नसैं, पावै सुक्ख अपार ।। ६ ।।
जब तू जानै पीव हीं, वह अपनो करि लेहि ।
परम धाम में राखि कर, बाँह पकरि सुख देहि ।।१०।।
यही सिखापन देत हूँ, धारो हिरदय माहिं ।
ऐसा पौधा बोइयो, ताकी बैठै छाँहिं ।।११।।
सतबादी सत सूँ रहो, सत हीं मुख सूँ बोल ।
एक ओर हरि नाम रख, एक ओर जग तोल ।।१२।।

---

(१) नहीं अच्छा लगता । (२) दूसरा । (३) धूल, राख । (४) पतिब्रता ।

॥ राग मंगल ॥

सोई सोहागिल नारि पिया मन भावई।
अपने घर को छोड़ि न पर घर जावई॥
अपने पिय का भेद न काहू दीजिये।
तन मन सुरति लगाय के सेवा कीजिये॥
पति की अज्ञा चाल पाल पिय को कहो।
लाज लिये कुलवंत जतन हीं सूँ रहो॥
धनि धनि ह्वै जग माहिं पुरुष बहु हित धरै।
सब सूँ नायक[1] होय जो सिर बर[2] को करै॥
पिय कूँ चाहो रूप सिंगार बनाइये।
पतिब्रता कुल दोय में सोभा पाइये॥
नौधा बस्तर पहिरि दया रंग लाल है।
भूखन बस्तर धारि बिचित्तर बाल है॥
रंग महल निर्दोष व्हाँ झिलमिल नूर है।
निरगुन सेज बिछाय सभी करि दूर भय॥
मंदिर दीपक बाल बिन बाती घीव की।
सुघर चतुर गुन रासि लाड़िली पीव की॥
कहें गुरू सुकदेव यों बालम मोहिये।
चरनदास ले सीख जो प्रेम समोइये॥१३॥

॥ राग सोरठ ॥

तू सदा सोहागिन नारी है।
पिय के संग मिली पद पीवै ताते लागत प्यारी है॥
भँवर गुफा में भँवर बनायो बिन घृत जोती जारी है।
सुखमन सेज महा सुखदाई भोगत भोग दुलारी है॥
बस कियो कंता चलै न पंथा टोना डारो भारी है।
आठ पहर तुम्हरे रंग राचो हमको मिलै न बारी है॥

(१) बड़ा। (२) पति।

पति मन मानी सो पटरानी सोई रूप उजारी है।
हम चारौ जो सौति तुम्हारी तुम गुन आगे हारी है॥
चरनहिं दास भई तोहिं सेवै लगी रहै नित लारी है।
सुकदेवा सिर छत्र हमारो सो बस भयो तुम्हारी है॥

—: ० :—

॥ अनहद शब्द की महिमा और उसकी प्राप्ती का बिलास ॥

॥ शब्द १ ॥

॥ अष्टपदी ॥

अनहद शब्द अपार दूर सूँ दूर है।
चेतन निर्मल शुद्ध देंह भरपूर है॥ १॥
निःअच्छर है ताहि और निःकर्म है।
परमातम तेहि मानि वही परब्रह्म है॥ २॥
याके कीने ध्यान होत है ब्रह्म हीं।
धारै तेज अपार जाहि सब भर्म हीं॥ ३॥
वा पटतर[1] कोइ नाहिं जो यों हीं जानिये।
चाँद सूर्य्य अरु सृष्टि के माहिं पिछानिये॥ ४॥
या को छोड़ै नाहिं सदा रहै लीन हीं।
यही जो अनहद सार जानि परबीन हीं॥ ५॥
यों जिव आतम जान जो अनहद लीन हो।
सो परमातम होय जीवता जाय खो॥ ६॥
ध्यानी को मन लीन होय अनहद सुनै।
आप अनाहद होय बासना सब भुनै॥ ७॥
पाप पुन्य छुटि जायँ दोऊ फल ना रहैं।
होय परम कल्यान जो तिरगुन[2] ना गहैं॥ ८॥

(१) बराबर। (२) सत रज तम अर्थात् ब्रह्मा बिष्णु महेश।

॥ शब्द २ ॥

॥ दोहा ॥

करते अनहद ध्यान के, ब्रह्म रूप हो जाय।
चरनदास यों कहत हैं, बाधा सब मिटि जाय ॥ १ ॥
गगन मध्य जो कँवल है, बाजत अनहद तूर।
दल हजार को कमल है, पहुँचै गुरु मत सूर ॥ २ ॥
गगन मंडल के कमल में, सतगुरु ध्यान निहार।
चरनदास सुकदेव परस के, मेटै सकल बिकार ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

॥ छप्पै ॥

नौ नाड़ी को खैंचि पवन लै उर में दीजै।
बज्जर ताला लाय द्वार नौ बंद करीजै ॥ १ ॥
तीनौं बंद लगाय अस्थिर अनहद आराधै।
सुरति निरति का काम राह चल गगन अगाधै ॥ २ ॥
सुन्न सिखर चढ़ि रहै दृढ़ जहाँ आसन करै।
भन[1] चरनदास ताड़ी लगै सो राम दरस कलिमल हरै ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४ ॥

॥ छप्पै ॥

मूल कमल में खेलि पिया को देखन चलिये।
उलटि बेधि षट चक्र जाइ सतवें से मिलिये ॥ १ ॥
प्रान अपान मिलाइ राह पच्छिम की लीजै।
बक नाल कूँ सोध प्रान लै ता में दीजै ॥ २ ॥
मेरु दंड चढ़ि जाय जब लोक लोक की गम परै।
भन[1] चरनदास ब्रह्मंड में ब्रह्मदरसी दरसन करै ॥ ३ ॥

---

(१) कहै।

॥ शब्द ५ ॥

॥ छप्पै ॥

दल असंख को कमल रूप जहँ सत्त बिराजै।
अनंत भानु परकास जहाँ अनहद धुनि गाजै ॥ १ ॥
सुन्दर छबि अति हंस सत जन आगे ठाढ़े।
जहँ पहुँचै कोइ सूर बीर नीसान जो गाड़े ॥ २ ॥
कमल मध्य जो तख्त है सोभा अपार बरनूँ कहा।
कहैं चरनदास उस तख्त पर आदि पुरुष अद्भुत महा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६ ॥

॥ छप्पै ॥

छत्र फिरत नित रहत चँवर ढोरत जहँ हंसा।
जहँ दरसन करै सिष्य मिटै जुग जुग का संसा ॥ १ ॥
आवा गमन ह्वै रहित मरन जीवन नहिं होई।
आनि मिलै जब चारि मुक्त कहियत है सोई ॥ २ ॥
जहँ अमर लोक लीला अमर फल अनेक तहँ पावई।
भन[1] चरनदास सुकदेव बल चौथा पद इमि गावई ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७ ॥

॥ छप्पै ॥

जहाँ चंद नहिं सूर जहाँ नहिं जगमग तारे।
जहाँ नहीं त्रैदेव त्रिगुन माया नहिं लारे ॥ १ ॥
जहाँ बेद नहिं भेद जहाँ नहिं जोग जज्ञ तप।
जहाँ पवन नहिं धरनि अगिन नहिं जहाँ गगन अप[2] ॥ २ ॥
जहाँ रात नहिं दिवस है पाप पुन्य नहिं ब्यापई।
आदि अंत अरु मध्य है कहैं चरनदास ब्रह्म आप ही ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

॥ छप्पै ॥

जहाँ काल नहिं ज्वाल भर्म नहिं तिमिर उजारा।
जहाँ राग नहिं द्वेस जहाँ नहिं कर्म अचारा ॥ १ ॥

---

(१) कहै। (२) पानी।

जहाँ काम नहिं क्रोध लोभ नहिं मोह न रेसा ।
जहाँ मित्र नहिं सत्रु जहाँ नहिं देस बिदेसा ॥ २ ॥
चरनदास इक ब्रह्म है और न दूजो कोइ तहाँ ।
भया जीव सूँ ब्रह्म जब जोग जुक्ति पहुँचे जहाँ ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

॥ छप्पै ॥

जहाँ आतम देव अभेव सेव कबहूँ न करावै ।
इच्छा दुई न द्रोह कर्म नहिं भर्म सतावै ॥ १ ॥
जहँ जाप ताप नहिं आप तहाँ नहिं रूप न रेखा ।
जासु जाति नहिं पाँति नारि नहिं पुरुस बिसेखा ॥ २ ॥
पार ब्रह्म पूरन सदा है अखंड नहिं खंडिता ।
भन चरनदास ताड़ी लगै सो सुन्न सिखर में मंडिता ॥ ३ ॥

॥ शब्द १० ॥

॥ दोहा ॥

मन पवना बस कीजिये, ज्ञान जुक्ति सूँ रोक ।
सुरति बाँधि भीतर धसै, सूझै काया लोक ॥ १ ॥
चरनदास यहि बिधि कही, चढ़िबे कूँ आकास ।
सोध साधि साधन अगम, पूरन ब्रह्म बिलास ॥ २ ॥

॥ शब्द ११ ॥

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

सतगुरु निज पुर धाम बसाये ।
जित के गये अमर ह्वै बैठे भवजल बहुरि न आये ॥ १ ॥
जोगी जोग जुक्ति करि हारे ध्यानी ध्यान लगावै ।
हरि जन गुरु की दया बिना यों दृष्टि नहीं दरसावै ॥ २ ॥
पंडित मुंडित चुंडित ढूँढैं पढ़ि सुनि बेद पुरानै ।
जा सूँ वै सब पायो चाहैं सो तो नेति बखानै ॥ ३ ॥

जंगम जती तपी सन्यासी सब हीं वा दिसि धावैं।
सुरति निरति की गम जहँ नाहीं वै कहो कैसे पावैं ॥ ४ ॥
देस अटपटा बेगम[1] नगरी निगुरे राह न पाया।
चरनदास सुकदेव गुरू ने किरपा करि पहुँचाया ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥
॥ राग सोरठ व नट व बिलावल ॥

सो नैना मोरे तुरिया तत पद अटके।
सुरति निरति की गम नहिं सजनी जहाँ मिलन को लटके ॥१॥
भूलो जगत बकत कछु औरै बेद पुरानन ठठके।
प्रीति रीति की सार न जानै डोलत भटके भटके ॥२॥
किरिया कर्म भर्म उरझे रे ये माया के झटके।
ज्ञान ध्यान दोउ पहुँचत नाहीं राम रहीमा फटके ॥३॥
जग कुल रीति लोक मर्यादा मानत नाहीं हटके।
चरनदास सुकदेव दया सूँ त्रैगुन तजि के सटके ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥
॥ राग करखा ॥

पिंड ब्रह्मंड की सैल गुरु गम करी।
सरसिया जुक्ति सूँ अलख राई।
सहज ही सहज पग धरा जब अगम को।
दसौं परकार झागड़[2] बजाई ॥१॥
खोलि कपाट अरु बज्र द्वारे चढ़ो।
कला के भेद कुंजी लगाई।
पहिले महल पर जाय आसन किया।
दूसरे महल की खबर पाई ॥२॥
तीसरे महल पर सुरति जा बस रही।
महल चौथे दुही अमी गाई[3] ॥

(१) अगम। (२) बाजा। (३) गाय।

पाँचवें महल को साध कोइ पाइ है।
महल छटवाँ दिया गुरु बताई ॥३॥
सातवें महल पर कोटि सूरज दिपैं।
आठवें महल अवगति गोसाईं ॥
रूप अद्भुत तहाँ देखि अचरज जहाँ।
देखिया दरस तब बिपति जाई ॥४॥
सुकदेव की सहा सों धारना गहा सो।
आपने पीव के भवन आई ॥
चरनदास आपा दिया प्रेम प्याला पिया।
सीस सदके किया पूजि पाईं ॥५॥

॥ शब्द १४ ॥

॥ राग जैजैवन्ती ॥

ऐसी जो जुगत जानै सोई जोगी न्यारा ॥ टेक ॥
आसन जो सिद्ध करै त्रिकुटी में ध्यान धरै।
बिना तेल दिया बरै जोति हूँ उजारा ॥ १ ॥
संजम सँभाल साधै मूल द्वार बंद बाँधै।
संखिनी उलटि साधै कामदेव जारा ॥ २ ॥
प्रान बायु हिये माहीं खैंचि के अपान लाहीं।
दोऊ नीके मिलि जाहीं ऐसा खेल धारा ॥ ३ ॥
कुम्भक अथक राखै अनहद की ओर ताकै।
सुखमन पैठि नाकै आगे जो बिचारा ॥ ४ ॥
खोलि के कपाट सिरा कोऊ चढ़ै सूर बीरा।
काम धेनु जावै तीरा अमी को उतारा ॥ ५ ॥
उन्मुनी जाय लागै निज ग्रह माहिं जागै।
जनम मरन भागै छूटै जम भारा ॥ ६ ॥
गुरु सुकदेव कहैं करनी यहि बिधि लहैं।
चरनदास होय रहै आप को सँभारा ॥ ७ ॥

बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

॥ राग मलार ॥

सतगुरु भौसागर डर भारी ।
काम क्रोध मद लोभ भँवर जित लरजत नाव हमारी ॥ १ ॥
त्रिस्ना लहर उठत दिन राती लागत अति झकझोरा ।
ममता पवन अधिक डरपावै काँपत है मन मोरा ॥ २ ॥
और महा डर नाना बिधि के छिन छिन में दुख पाऊँ ।
अन्तर जामी बिनती सुनिये यह मैं अरज सुनाऊँ ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव सहाय करो अब धीरज रहा न कोई ।
चरनदास को पार उतारो सरन तुम्हारी सोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

॥ राग रामकली ॥

पतित उधारन बिरद[1] तुम्हारो ।
जो यह बात साँच है हरि जू, तौ तुम हम कूँ पार उतारो ॥१॥
बालपने औ तरुन अवस्था, और बुढ़ापे माहीं ।
हम से भई सभी तुम जानो, तुम से नेक छिपानी नाहीं ॥२॥
अनगिन पाप भये मन माने, नखसिख औगुन धारी ।
हरि फिरि कै तुम सरनै आयौ, अब तुम को है लाज हमारी ॥३॥
सुभ करमन को मारग छूटो, आलस निद्रा घेरो ।
एकहिं बात भली बन आई, जग में कहायो तेरो चेरो ॥४॥
दीनदयाल कृपाल बिसंभर, श्री सुकदेव गोसाईं ।
जैसे और पतित घन तारे, चरनदास की गहियो बाँहीं ॥५॥

(१) कीर्ति ।

॥ शब्द ३ ॥

॥ राग रामकली ॥

अर्ज सुनो जगदीस गोसाईं ।
ग्रह नछत्र अरु देव बिसार्‌यो, चरन कँवल की आयो छाहीं ॥१॥
सत बिस्वास यही हिये धार्‌यो, तोहिं न भूलूँ एक घरी ।
इत उत सूँ मन खैंच लियो है, काहू से कछु नाहिं सरी ॥२॥
अब चाहो सो करो प्रभु तुमहीं, द्वारे तुम्हरे सुरति अरी ।
भावै नर्क स्वर्ग पहुँचावो, भावै राखौ निकट हरी ॥३॥
अपनी चाह रही नहिं कोई, जब सूँ तुम्हरी आस धरी ।
आनि भरोसो छाँड़ दियो है, सकल बिकल[1] सब छार करी ॥४॥
यह आपा तुमहीं कूँ दीन्ही, मेरी मो में कुछ न रही ।
आदि पुरुस सुकदेव सुनो जी, चरन दास यों टेर कही ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

॥ राग धनाश्री ॥

अब तुम करो सहाय हमारी ।
मन के रोग होय गये दीरघ तन के बड़े बिकारी ॥१॥
तुम सों बैद और को दूसर जाहि दिखाऊँ नारी[2] ।
सजीवन मूल अमर हो जासों सो है दया तुम्हारी ॥२॥
क्रिया कर्म की औषधि जेती रोग बढ़ावन हारी ।
दीजै चूरन ज्ञान भक्ति को मेटो सकल बिथा री ॥३॥
जन के काज पियादे धावत चरन कँवल पर वारी ।
मैं भयो दास अधीन तुम्हारो मेरी करो सँभारी ॥४॥
जो मोहिं कुटिल कुचालि जानि कै मेरी सुरति बिसारी ।
चरनदास है सुकदेव तेरो दुष्ट हँसैंगे भारी ॥५॥

---

(१) कष्ट । (२) नाड़ी, नब्ज़ ।

॥ शब्द ५ ॥

॥ राग केदारा ॥

अब की तारि देव बल बीर ।
चूक मो सूँ परी भारी कुबुधि के संग सीर[१] ॥१॥
भौ सागर की धार तीच्छन महा गंधीलो[२] नीर ।
काम क्रोध मद लोभ भँवर में चित न धरत अब धीर ॥२॥
मच्छ जहँ बलवंत पाँचौ थाह गहिर गँभीर ।
मोह पवन झकोर दारुन दूर पैलव[३] तीर ॥३॥
नाव तौ मँझ धार भरमी हिये बाढ़ी पीर ।
चरनदास कोइ नाहिं संगी तुम बिना हरि हीर[४] ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

॥ राग बिलावल ॥

प्रभु जू सरन तिहारी आयो ।
जो कोइ सरन तिहारी नाहीं भरम भरम दुख पायो ॥१॥
औरन के मन देवी देवा मेरे मन तुहि भायो ।
जब सों सुरति सम्हारी जग में और न सीस नवायो ॥२॥
नरपति सुरपति आस तुम्हारी यह सुनि कै मैं धायो ।
तीरथ बरत सकल फल त्याग्यो चरन कमल चित लायो ॥३॥
नारद मुनि अरु सिव ब्रह्मादिक तेरो ध्यान लगायो ।
आदि अनादि जुगादि तेरो जस बेद पुरानन गायो ॥४॥
अब क्यों न बाँह गहो हरि मेरी तुम काहे बिसरायो ।
चरनदास कहैं करता तूही गुरु सुकदेव बतायो ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

॥ राग सोरठ ॥

अब जग फंद छोड़ावो जी हूँ चरन कँवल को चेरो ।
पड़ो रहूँ दरबार तिहारे संतन माहिं बसेरो ॥१॥

---

(१) खेती । (२) बदबूदार । (३) फ़ासला । (४) सार ।

बिना कामना करूँ चाकरी आठों पहरे नेरो।
मनसब[1] भक्ति कृपा करि दीजै यही मोहिं बहुतेरो ॥२॥
खानेजाद कदीमी[2] कहियो तुही आसरो मेरो।
झिड़क बिडारो तहूँ न छोड़ूँ सेवा सुमिरन तेरो ॥३॥
काहू ओर आन देवन सूँ रहो नहीं उरझेरो।
जैसे राखो त्योंहीं रह हूँ करि लीजै सुरझेरो ॥४॥
तेरे घर बिन कहूँ न मेरो ठौर ठिकानो डेरो।
मोसे पतित दीन कूँ हरि जू तुम हीं करो निबेरो ॥५॥
गुरु सुकदेव दया करि मोको ओर तिहारी फेरो।
चरनदास को सरनै राखौ यही इनाम घनेरो[3] ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम साहब करतार हो हम बंदे तेरे।
रोम रोम गुनेगार हैं बखसो हरि मेरे ॥ १ ॥
दसौं दुवारे मैल है सब गंदम गंदा।
उत्तम तेरो नाम है बिसरै सो अंधा ॥ २ ॥
गुन तजिकै औगुन कियो तुम सब पहिचानो।
तुम सूँ कहा छिपाइये हरि घट की जानो ॥ ३ ॥
रहम करो रहमान सूँ यह दास तिहारो।
भक्ति पदारथ दीजिये आवा गवन निवारो ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव उबारि लो अब मेहर करीजै।
चरनहिं दास गरीब कूँ अपनो करि लीजै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

॥ राग काफी ॥

तुव गुन करूँ बखान यह मेरि बुद्धि कहाँ है ॥टेक॥
चतुर मुखी ब्रह्मा गुन गावैं तिनहुँ न पायो जान ॥ १ ॥
गुन गावत संकर जब हारे करने लागे ध्यान ॥ २ ॥

---

(१) दर्जा। (२) पुराना गुलाम। (३) बहुत।

गुन अपार कछु पार न पायो सनकादिक कथि ज्ञान ॥ ३ ॥
गुन गावत नारद मुनि थाके सहस मुखन सूँ सेस ॥ ४ ॥
लीला को कछु वार न पायो ना परिमान न भेस ॥ ५ ॥
सक्ति घनी अनगिनित तुम्हारी बहुत रूप बहु नावँ ॥ ६ ॥
जबहि बिचारूँ हिये में हारूँ अचरज हेरि हिरावँ ॥ ७ ॥
अति अथाह कछु थाह न पाऊँ सोच अचक रहि जावँ ॥ ८ ॥
गुरु सुकदेव थके रनजीता मैं कहु कौन कहावँ[1] ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

। राग बिहाग ॥

राखो जी लाज गरीब निवाज ।
तुम बिन हमरे कौन सँवारै सबहीं बिगरैं काज ॥ १ ॥
भक्तबछल हरि नाम कहावो पतित उधारनहार ।
करो मनोरथ पूरन जन को सीतल दृष्टि निहार ॥ २ ॥
तुम जहाज मैं काग तिहारो तुम तजि अंत न जाउँ ।
जो तुम हरि जू मारि निकासो और ठौर नहिं पाउँ ॥ ३ ॥
चरनदास प्रभु सरन तिहारी जानत सब संसार ।
मेरी हँसी सो हँसी तुम्हारी तुम हूँ देखु बिचार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

॥ राग सोरठ ॥

मो कूँ कछु न चहिये राम ।
तुम बिन सबहीं फीके लागैं, नाना सुख धन धाम ॥ १ ॥
आठ सिद्धि नौ निद्धि आपनी, और जनन को दीजै ।
मैं तौ चेरो जन्म जन्म को, निज करि अपनो कीजै ॥ २ ॥
स्वर्ग फलन की मोहिं न आसा, ना बैकुंठ न मोच्छहिं चाहूँ ।
चरन कमल के राखौ पासा, यहि उर माहिं उमाहूँ ॥ ३ ॥
भक्ति न छोड़ूँ मुक्ति न माँगूँ, सुन सुकदेव मुरारी ।
चरनदास की यही टेक है, तजूँ न गैल तुम्हारी ॥ ४ ॥

---

(१) मैं कौन गिनती में हूँ।

॥ शब्द १२ ॥

॥ राग कल्यान ॥

सतगुरु पाँचौ भूत उतारौ।
जनन जनम के लागेहिं आये। दे मंतर अब तिन्हैं बिडारौ ॥१॥
काम क्रोध मोह लोभ गर्ब ने। मन बौराय कियो अपभायो[1]।
जिनके हाथ परो जिव मेरो। घेरा घेरि बहुत दुख पायो ॥२॥
एक घरी मोहिं छोड़त नाहीं। लहरि चढ़ाय कै बहुत निवायो[2]।
कपि ज्यों घर घर द्वार नचावै। उत्तम हरि को नाम छुटायो ॥३॥
अब की सरन गही है तुम्हरी। चरनहिं दास अजाने[3]।
किरपा करि यह ब्याधि छुटाबो। गुरु सुकदेव सयाने ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

॥ राग सोरठ ॥

गुरुदेव हमारे आवो जी।
बहुत दिनों से लगो उमाहो[4]। आनंद मंगल लावो जी ॥१॥
पलकन पंथ बुहारूँ तेरो। नैन परे पग धारो जी।
बाट तिहारी निस दिन देखूँ। हमरी ओर निहारो जी ॥२॥
करूँ उछाह[5] बहुत मन सेती। आँगन चौक पुराऊँ जी।
करूँ आरती तन मन वारूँ। बार बार बलि जाऊँ जी ॥३॥
दै पैकरमा सीस नवाऊँ। सुनि सुनि बचन अघाऊँ जी।
गुरु सुकदेव चरन हूँ दासा। दरसन माहिं समाऊँ जी ॥४॥

—:०:—

करम भरम का निषेध

॥ शब्द १ ॥

॥ राग जैजैवंती ॥

गुरु बिन ज्ञान नाहिं तिमिर नसावै ॥ टेक ॥
भाई भरमत फिरैं लोई जल और पाहन सेई।
बात नहीं बूझै कोई तिन को वह ध्यावै ॥१॥

---

(१) मनमानी। (२) नीचा दिखलाया। (३) नादान। (४) उमंग, लालसा। (५) उत्साह।

देवी और देव पूजै जहँ कछु नाहिं सूझै।
फेरि फेरि जावै दूजे तहाँ नहीं पावै ॥ २ ॥
बैदिक को भेद ठानै ज्योतिष बिचार जानै।
काहू की कही नाहिं मानै करै मन भावै ॥ ३ ॥
भूत टोना जादू सेवै प्रभु को न नाम लेवै।
गुरु भक्ती में न चित देवै गुन नाहिं गावै ॥ ४ ॥
श्री सुकदेव कहैं चरन दास होय रहै।
सोई मुक्ति धाम लहै आपा जो उठावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥
॥ होरी राग धनाश्री ॥

साधो घूँघट भर्म उठाय होली खेलिये ॥ टेक ॥
बेद पुरान लाज तजिबे री इनमें ना उरझैये ॥ १ ॥
सिर सूँ सकुच उतारि चदरिया पिय सूँ रंग बढ़ैये ॥ २ ॥
रूप न रेख है सूरति मूरति ता के बलि बलि जैये ॥ ३ ॥
अचल अजर अबिनासी सोई सनमुख दरसन पैये ॥ ४ ॥
सत चेतन आनंद सदा हीं निरभय ताल बजैये ॥ ५ ॥
पाप पुन्य की संका त्यागो जहँ मर्जाद न पैये ॥ ६ ॥
ओला नीर बिचारो जैसे यौं आपा बिसरैये ॥ ७ ॥
चरनदास बासना तजि कै सागर बुंद समैये ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥
॥ राग बिलास ॥

घट मे तीरथ क्यों न नहावो ॥ टेक ॥
इत उत डोलो पथिक बने हीं । भरमि भरमि क्यों जन्म गंवायो ॥ १ ॥
गोमती कर्म सुकारथ कीजै । अधरम मैल छुटावो ॥ २ ॥
सील सरोवर हित करि न्हैये । काम अगिन की तपन बुझावो ॥ ३ ॥
रेवा[1] सोई छिमा को जानो । ता में गोता लीजै ॥ ४ ॥
तन में क्रोध रहन नहिं पावै । ऐसी पूजा चित दै कीजै ॥ ५ ॥

(१) नर्बदा नदी ।

सत जमुना संतोष सरस्वति । गंगा धीरज धारो ॥६॥
झूँठ पटकि निर्लोभ होय करि । सब हीं बोझा सिर सूँ डारो ॥७॥
दया तीर्थ कर्मनासा कहिये । परसै बदला जावै ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं । चौरासी में फिर नहिं आवै ॥९॥

॥ शब्द ४ ॥

॥ राग बिलास ॥

घट में तीरथ यों तुम न्हावो ॥ टेक ॥

ता के न्हान अमर पद पहुँचो । आदि पुरुष निस्चै करि पावो॥१॥
कासी सो तत करनी कीजै । कलिमल सकल नसावो ॥२॥
रहनि गहनि पुष्कर करि जानो । यामें मंजन[1] क्यों न करावो॥३॥
ध्यान द्वारिका दृढ़ करि परसो । हित की छाप लगावो ॥४॥
इन्द्रीजित सोइ बद्रीनाथा । सत करि चित में लावो ॥५॥
भँवरगुफा में है तिर्बेनी । सुरति निरति लै धावो ॥६॥
जोग जुक्ति सूँ चुबकी[2] लेकरि । काग पलटि हंसा होइ जावो॥७॥
तन मथुरा अरु मन बिन्द्राबन । ता में रास रचावो ॥८॥
हिरदे कँवल खिले परकासा । दरसन देखि अधिक हुलसावो॥९॥
गुरु चरनन में सबहीं तीरथ । सिमटि सिमटि तहँ आवो ॥१०॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं । अपनो मस्तक भेंट चढ़ावो ॥११॥

॥ शब्द ५ ॥

॥ होरी राग धमार ॥

साधो चलो तुम सँभारी जग होरी मचि रहि भारी ॥टेक॥

दंभ पखंड गहे कर में डफ डूबड़ डूबड़[3] की तारी ।
त्रैगुन तार तंबूरा साजे आसा तृस्ना गति धारी ॥ १ ॥
पाप पुन्य दोउ ले पिचुकारी छोड़त हैं बारी बारी ।
सनमुख ह्वै करि जो नर खेलो ता के चोट लगी कारी ॥ २ ॥

(१) स्नान । (२) गोता । (३) ताली बजाने की आवाज़ का धुन्यात्मक शब्द ।

लोभ मोह अभिमान भरो लै माया गागरि डारी ।
राजा परजा जोगी तपसी भींज रहे संसारी ॥ ३ ॥
कुबुधि गुलाल डारि मुख मींजो काम कला पुटली मारी ।
जुग जुग खेलत यौं चलि आई काहू ते नाहीं हारी ॥ ४ ॥
जड़ चेतन दोउ रूप सँवारे एक कनक दूजी नारी ।
पाँच पचीस लिये संग अबला हँसि हँसि मिल गावत गारी ॥ ५ ॥
चतुरा फगुवा दै दै छूटे मूरख को लागी प्यारी ।
चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन ज्ञान गली न्यारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥
॥ राग बिलावल ॥

घट में खेलि ले मन खेला ॥ टेक ॥
सकल पदारथ घट ही माहीं हरि सूँ होय जो मेला ॥ १ ॥
घट में देवल घट में जोती घट में तीरथ सारे ॥ २ ॥
बेगहिं आव उलट घट माहीं बीतै[1] बरबी[2] न्हारे ॥ ३ ॥
घट में भरो है मान सरोवर मोती चुगै मराला[3] ॥ ४ ॥
घट में ऊँचा ध्यान शब्द का सोहं सोहं माला ॥ ५ ॥
घट में बिन सूरज उजियारा राति दिना तहिं सूझै ॥ ६ ॥
अमृत भोजन भोग लगतु है बिरला जन कोइ बूझै ॥ ७ ॥
घट में पापी घट में धर्मी घट में तपसी जोगी ॥ ८ ॥
गुन औगुन सब घट ही माहीं घट में बैद अरु रोगी ॥ ९ ॥
राम भक्ति घट ही में उपजे घट में प्रेम प्रकासा ॥१०॥
सुकदेव कहैं चौथा पद घट में पहुँच चरन हीं दासा ॥११॥

॥ शब्द ७ ॥
॥ राग सोरठ व बिलावल ॥

जो नर इत के भये न उत के ॥ टेक ॥
उत को प्रेम भक्ति नहिं उपजी । इत नहिं नारी सुत के ॥१॥
घर सूँ निकसि कहा उन कीन्हा । घर घर भिच्छा माँगी ॥२॥

(१) बीतती है । (२) परब का दिन । (३) हंस ।

बाना सिंह चाल भेड़न की । साध भये अकि[1] स्वांगी ॥३॥
तन मूड़ा पै मन नहिं मूड़ा । अनहद चित्त न दीन्हा ॥४॥
इन्द्री स्वाद मिले बिषयन सूँ । बक बक बक बक कीन्हा ॥५॥
माला कर में सुरति न हरि में । यह सुमिरन कहु कैसा ॥६॥
बाहर भेख धारि के बैठे । अंतर पैसा पैसा ॥७॥
हिंसा अकस कुबुधि नहिं छोड़ी । हिरदै सांच न आया ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं । बाना पहिरि लजाया ॥९॥

॥ शब्द ८ ॥

॥ राग गौरी ॥

सब जग भर्म भुलाना ऐसे ।
ऊँट कि पूँछ से ऊँट बँध्यो ज्यों भेड़ चाल है जैसे ॥ टेक॥
खर[2] का सोर[3] भूँस[4] कूकर[5] की देखा देखी चाली ।
तैसे कलुआ[6] जाहिर भैरों[6] सेढ़[6] मसानी[6] काली[6] ॥ १ ॥
गाँव भूमिया हित करि धावैं, जाय बटोही दौरे ।
सद्दो[7] सरवर इष्ट धरत हैं, लोग लोगाई बौरे ॥ २ ॥
राखं भाव स्वान[5] गर्धभ को, उनको लाय जिमावैं[8] ।
ठेठ चमारन को सिर नावैं, ऊँची जाति कहावैं ॥ ३ ॥
दूध पूत पाथर से माँगैं, जाके मुख नहिं नासा ।
लपसी पपड़ी ढेर करत हैं, वह नहिं खावै मासा[9] ॥ ४ ॥
वाके आगे बकरा मारैं, ताहि न हत्या जाने ।
लै लोहू माथे सों लावैं, ऐसे मूढ़ अयाने ॥ ५ ॥
कहैं कि हमरे बालक जावै[10], बड़ी अयुर्बल[11] दीजै ।
उनके आगे बिन्ती करते, अँसुवन हिरदा भीजै ॥ ६ ॥

---

(१) या कि । (२) गदहा । (३) रेंकना । (४) भूँकना । (५) कुत्ता । (६) बनाये हुए देवी और देवता । (७) शेख़ सद्दो । (८) खिलाते हैं । (९) माशा भर । (१०) जनमै । (११) उमर ।

भोये भटरे[1] के पग लागैं, साधु संत की निंदा।
चेतन को तजि पाहन[2] पूजैं, ऐसा यह जग अंधा ॥ ७ ॥
सत संगति को ओर न झाँकैं, भक्ति करत सकुचावैं।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, क्यों न नरक को जावैं ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥
॥ राग गौरी ॥

अरे नर क्या भूतन की सेवा।
दृष्टि न आवै मुख नहिं बोलै ना लेवा न देवा ॥ टेक ॥
जेहिं कारन घी जोति जलावै, बहु पकवान बनावै।
सो खर्चै तू अधिक चाव सूँ, वह सुपने नहिं खावै ॥ १ ॥
राति जगावैं भोपा[3] गावैं, झूठै मूँड़ हिलावैं।
कुटुंब सहित तोहिं पैर पड़ावैं, मिथ्या बचन सुनावैं ॥ २ ॥
ताहि भरोसे जन्म गँवावैं, जीवत मरत न साथा।
बड़ भागन नर देही पाई, खोवैं अपने हाथा ॥ ३ ॥
चारि बरन में मैली बुधि का, ऊँच नीच किन होई।
जो कोइ झूठी आसा राखै, अगत जायगा सोई ॥ ४ ॥
ताते सत बिस्वास टेक गहि, भक्ति करो हरि केरी।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, होय मुक्ति गति तेरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥
॥ राग सोरठ ॥

साधो भरमा यह संसारा ॥ टेक ॥
गति मति लोक बड़ाई उरझे कैसे हो छुटकारा ॥ १ ॥
भर्म पड़े नाना बिधि सेती, तीरथ बर्त अचारा ॥ २ ॥
देह कर्म अभिमानी भूले, छूँछ पकरि तत डारा[4] ॥ ३ ॥
जोगी जोग जुक्ति करि हारे, पंडित बेद पुराना ॥ ४ ॥

---

(१) भाट। (२) पत्थर। (३) देवी पूजा में जो गीत गाते हैं। (४) सार छोड़ कर असार को पकड़ा।

षट दरसन पग आप पुजावैं, पहिरि पहिरि रंग बाना ॥ ५ ॥
जानत नाहिं आप हम को हैं, को है वह भगवाना ॥ ६ ॥
को यह जगत कौन गति लागै, समझै ना अज्ञाना ॥ ७ ॥
जा कारन तुम इत उत डोलौ, ता को पावत नाहीं ॥ ८ ॥
चरनदास सुकदेव बतायो, हरि हैं अंतर माहीं ॥ ९ ॥

॥ शब्द ११ ॥

॥ राग सारंग ॥

घट घट में रमता रमि रहेव ॥ टेक ॥
चेतन तजै भजै जल पाहन, मूरख भ्रम में भ्रमि रहेव ॥१॥
एक अखंड रहेव सब ब्यापक, लख चौरासी समि रहेव ॥२॥
प्रगट भानु[1] ऐसे हरि दरसैं, संपुट[2] में नहिं खमि[3] रहेव ॥३॥
आपा जानि भूल फिर आपन, नख सिख सूँ नहिं हम रहेव ॥४॥
चरनदास सुकदेवहिं रलि गयो, बचन बिलास न गम रहेव ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

॥ चौपाई ॥

ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पिछानै । बाहर जाता भीतर आनै ॥१॥
पाँचौ बस करि झूँठ न भाखै । दया जनेऊ हिरदे राखै ॥२॥
आतम बिद्या पढ़ै पढ़ावै । परमातम का ध्यान लगावै ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ न होई । चरन दास कहैं ब्रान सोई ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

॥ अरिल छंद ॥

आतम ज्ञान बिना नहिं मुक्ता । बेद भेद करि देखा जोय ॥१॥
ब्रह्मा सेस महेस पूज करि । बस वह लोक रहत नहिं सोय ॥२॥
जल पाहन अरु भूत भवानी । पूजि पूजि भरमा सब कोय ॥३॥
चरनदास तत बिरला जानै । आवा गवन दुख बहुरि न होय ॥४॥

---

(१) सूरज । (२) डिबिया जिसमें शालिगराम रखते हैं । (३) छिपा ।

॥ शब्द १४ ॥

॥ राग सवैया ॥

न ऊरध बाहु न अंग भभूति । न धूनी लगाय जटा सिर धारूँ ।
न मूँड़ मुड़ाय फिरूँ बन हीं बन । तीरथ बर्त नहीं तन गारूँ ॥१॥
उलटि लखो घट में प्रतिबिंब सो । दीपक ज्ञान चहूँ दिस जारूँ ।
चरनदास कहैं मन हीं मन में । अब तुही तुही करि तोहिं पुकारूँ ।२।

॥ शब्द १५ ॥

॥ राग होरी ॥

वह देस अटपटा बिकट पंथ । कोइ गुरुमुख पहुँचै होय संत ॥टेक॥
बहुत चले मग चाव चाव । औरन सूँ कहि आव आव ॥१॥
हमहुँ पहुँच तुम्हैं दें बसाय । ऐसो जान्यो सुलभ दाय[1] ॥२॥
बहुतक तपसी कष्ट साध । बहुतक पंडित पोथी लाद ॥३॥
बहुतक चुंडित जटा धारि । चहुँ ओर पावक जारि जारि ॥४॥
बहुतक मुंडित पूजा राखि । बहुतक भक्तन पिछली साखि[2] ॥५॥
बहुतक जोगी पवन जीति । हरि मिलबे की करैं रीति ॥६॥
कायर थाके बाट माहिं । कछु इक आगे चले जाहिं ॥७॥
द्वै[3] कनक कामिनी लिये घेरि । सो भी उनके पड़े फेरि ॥८॥
कोइ उनसे छुट आगे जाय । जहँ ऋद्धि सिद्धि लेवैं लगाय ॥९॥
सुकदेव कहैं सब डारि आस । व्हाँ प्रेमी पहुँचै चरनदास ॥१०॥

॥ शब्द १६ ॥

त्रिकुटी में तीरथ अगम तिरबेनी जेहिं नाम ।
न्हाय जोग की जुक्ति सूँ पूरन हों सब काम ॥ १ ॥
रनजीत[4] कहैं जहँ न्हाइये त्रिकुटी तीरथ धाम ।
नित परबी जहँ होत है भजन करो निःकाम ॥ २ ॥

---

(१) दाँव । (२) बुजुर्गों का पक्ष । (३) दो । (४) चरनदास जी का घरऊ नाम ।

जा तीरथ को पवन न लागै । जा तीरथ में जन अनुरागै ॥१॥
जा तीरथ में पवन अनेका । पूरे गुरु सूँ मिलि मिलि देखा ॥२॥
वा तीरथ में जो कोइ न्हावै । भवसागर में बहुरि न आवै ॥३॥
जहाँ न चंद्र सूर नहिं तारे । गुरुगम पहुँचै अति मतवारे ॥४॥
जा तीरथ का बंधा जो नीर । उज्जल निरमल गहिर गँभीर ॥५॥
ब्रह्मा बिस्नु जहाँ त्रय देवा । जोग जुक्ति में लावैं सेवा ॥६॥
बारह मास दामिनी[1] दमकै । सोन पटीला जुगनू झमकै ॥७॥
रनजीत मीत बास जहँ कीजै । नित अस्नान महा सुख लीजै॥८॥

॥ शब्द १७ ॥

॥ राग सोरठ ॥

सुनु राम भक्ति गति न्यारी है ।
जोग जज्ञ संजम अरु पूजा । प्रेम सबन पर भारी है ॥टेक॥
जाति बरन पर जो हरि जाते । तौ गनिका क्यों तारी है ॥१॥
सेवरी सरस[2] करी सुर मुनि ते । हीन कुचील जो नारी है ॥२॥
दस्सासन पत खोवन लागेव । सब हीं ओर निहारी है ॥३॥
होय निरास कृश्न कहँ टेरी । बाढ़ो चीर अपारी[3] है ॥४॥
टेढ़ी लौंडी कंस रजा की । दीन्हो रूप करारी है ॥५॥
एक सों एक अधिक बृज नारी । कुबिजा कीन्हों प्यारी है ॥६॥
पाँचौ पँडवन जाय सजो है । सगरी सजी सँवारी है ॥७॥
बालमीक[4] बिन काज न होतो । बाजो संख मुरारी है ॥८॥
साधौं की सेवा में राचो । भूप की सुरति बिसारी है ॥९॥
सैना[5] भक्त के कारन हरि जू । वाकी सूरत धारी है ॥१०॥
दास कबीरा जाति जोलाहा । भये संत उपकारी है ॥११॥

---

(१) बिजली । (२) बराबरी । (३) जब दुशाशन जुए में पांडवों से उनकी स्त्री द्रोपदी को जीता और नंगी करने को उसकी सारी खींचने लगा तो द्रोपदी ने सब की ओर देखा पर कोई सहायक न हुआ तब निराश होकर उसने श्रीकृष्ण को टेरा जिन्होंने उसकी सारी को इतना बढ़ाया कि खींचते-खींचते दुशाशन हार गया । (४) भंगी जाति का भक्त । (५) नाई जाति का भक्त ।

साखि सुनो रैदास चमारा। सो जग में उँजियारी है ॥१२॥
कनक जनेऊ काढ़ि दिखायो। बिप्र गये सब हारी है ॥१३॥
अजामील सदना तिरलोचन। नाभा नाम अधारी है ॥१४॥
धना जाट कालू अरु कूवा। बहुत किये भौ पारी है ॥१५॥
प्रीत बराबर और न देखै। बेद पुरान बिचारी है ॥१६॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं। ता बस आप मुरारी है ॥१७॥

॥ शब्द १८ ॥
॥ राग रामकली ॥

चारि बरन सूँ हरि जन ऊँचे।
भये पवित्तर हरि के सुमिरे तन के उज्जल मन के सूचे ॥१॥
जो न पतीजै साखि बताऊँ सवरी के जूँठे फल खाये।
बहुत ऋषीसर छांईं रहते तिनके घर रघुपति नहिं आये ॥२॥
भिल्लनि पाँव दियो सरिता[1] में सुद्ध भयो जल सब कोइ जानै।
मंद हुतो सो निरमल हूवो अभिमानी नर भये खिसानै ॥३॥
ब्राह्मन छत्री भूप हुते बहु बाजो संख सुपच जब आयो।
बालमीक जग पूरन कीन्हो जैजैकार भयो जस गायो ॥४॥
जाति बरन कुल सोई नीको जाके होय भक्ति परकास।
गुरु सुकदेव कहत हैं तोको हरिजन सेव चरनहींदास ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥
॥ राग रामकली ॥

सब जातिन में हरि जन प्यारे ॥ टेक ॥
रहनी तिनकी कोइ न पावै। तन सूँ जग में मन सूँ न्यारे ॥१॥
साखि सुनो अंबरीष भूप की। दुरबासा जहँ आयो ॥२॥
लगो स्राप देन राजा को। चक्र सुदरसन जारन धायो ॥३॥
प्रभु जी आये दुरजोधन के। वह मन में गरबायो[2] ॥४॥
नाना बिधि के ब्यंजन त्यागे। साग बिदुर घर रुचि सूँ पायो॥५॥

(१) नदी। (२) अहंकार किया।

सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग। मान संत को राखो ॥६॥
भक्तन बस भगवान सदा हीं। बेद पुरानन में जो भाखो ॥७॥
ब्राह्मन छत्री बैस्य सूद्र घर। कहीं होय क्यों न बासा ॥८॥
धनि वह कुल सुकदेव बखानैं। यह तुम सुनो चरनहीं दासा॥९॥

॥ शब्द २० ॥

॥ छप्पै छंद ॥

पग तब होवैं सुद्ध साधु के पग को ध्यावै।
हस्त सुद्ध तब होयँ दोऊ कर सीस नवावै॥ १ ॥
नैन सुद्ध जब होयँ साध के दर्सन पावै।
रसन सुद्ध तब होय राम गुन मुख सूँ गावै॥ २ ॥
मन चरनदास सब सुद्ध होय जब चरन परस गुरदेव के।
वै आतम तत्व बिचार दें कर दरसन अलख अभेव[1] के॥ ३ ॥

॥ शब्द २१ ॥

॥ राग बिलावल ॥

थोथे सुमिरन कहा सरै ॥ टेक ॥
मन के रोग सोक नहिं खोये। हिंसा डूबे अकस जरे ॥१॥
नारी सुत सूँ मोह कियो है। नेक न हरि के प्रेम अड़े ॥२॥
कुल नाते परिवार सँभारे। साधन की नहिं टहल करे ॥३॥
माला तिलक सुधारि सँवारे। राखत छलबल मकर घने ॥४॥
अतर और निरंतर औरै। सिंह गऊ मुख रहत बने ॥५॥
ऐसी भक्ति मुक्ति नहिं पावै। करम लगैं अरु नरक परै ॥६॥
जम की दंड दहन पावक की। जनम मरन यों नाहिं टरै ॥७॥
लच्छन प्रेम[2] सहित जप कीजे। भीतर बाहर उघर[3] नचे ॥८॥
चरन दास सुकदेव कहत हैं। हरि रीझैं जब व्याधि बचे ॥९॥

(१) जिसका भेद न मिले। (२) प्रेम लच्छना जो दसवाँ प्रकार भक्ति का है।
(३) खुल कर।

॥ शब्द २२ ॥

॥ राग बिलावल ॥

हमारे चरन कँवल को ध्यान ॥ टेक ॥
मूरख जगत भरमता डोलै चाहत जल अस्नान ॥ १ ॥
सब तीरथ वाही सूँ प्रगटे गंगा आदिक जान ।
साकित[1] गिरही बानेधारी[2] हैं सब हीं अज्ञान ॥ २ ॥
हरि सों[3] हीरा छाँड़ि दियो है पूज काँच पखान ।
हरि चरनन की महिमा जानैं हैं वे संत सुजान ॥ ३ ॥
जिनसे ये सब पातक नासैं नित होवै कल्यान ।
भोंदू नर माया के चेरे इनको कह[4] पहिचान ॥ ४ ॥
चरनदास सुकदेव गुरू ने दीन्हो अंजन ज्ञान ।
साँचो प्रीतम जानि परो है बिसरि गयो सब आन ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

॥ छप्पै छंद ॥

माला तिलक बनाय पूर्ब अरु पच्छिम दौरा ।
नाभि कँवल कस्तूरि हिरन जंगल भो[5] बौरा ॥ १ ॥
चाँद सूर्य्य थिर नहीं नहीं थिर पवन न पानी ।
तिरदेवा थिर नहीं नहीं थिर माया रानी ॥ २ ॥
चरन दास लख दृष्टि भर एक शब्द भरपूर है ।
निरखि परखि ले निकट हीं कहन सुनन कूँ दूर है ॥ ३ ॥

—:०:—

सूरमा का अंग

॥ शब्द १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

ना कोइ संत समान है सूरा ।
मोह सहित सब सेना मारी ऐसो सावँत[6] पूरा ॥ १ ॥

(१) मुर्दा दिल । (२) भेखी । (३) ऐसा । (४) क्या । (५) भया । (६) बहादुर ।

छिमा की ढाल गही कर अपने बाँधे सस्त्र उदार[1] ।
करम धरम के दल को पेलै पल पल बारंबार ॥२॥
सुरत को तीर हृदय को तरकस ध्यान कमान बनावै ।
प्रेम हाथ सूँ खैंचन लागै चोट निसाने लावै ॥३॥
बुद्धि बिबेक कटारी बाँधे बचन बिलास कि बरछी ।
सत पुरुसों के हियरे बेधै कहि कहि बतियाँ तिरछी ॥४॥
चित में चाव चौगुनो उनके सुनि सुनि अनहद तूर ।
अगम पंथ सूँ पग न डिगावै होय जाय चकचूर[2] ॥५॥
मन हुलास आस धर पिय की सुनत खेत में धावै ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं अमर लोक पद पावै ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

साधू पैज[3] गहै सोइ सूर ।
काके मुख पर नूर है जब बाजै मारू तूर ॥१॥
कलंगी अरु गजगाह[4] बनावै इनका परन दुहेला[5] ।
सावँत भेख बनाय चलत हैं यह नहिं सहज सुहेला[6] ॥२॥
या बाने को नेम यही है पग धरि फिरि न उठावै ।
जो कुछ होय सो आगेहिं आगे आगे हीं को धावै ॥३॥
रन में पैठि झड़ाझड़ि खेलै सन्मुख सस्तर खावै ।
खेत न छोड़ै ह्वाँई जूझै तब हीं सोभा पावै ॥४॥
गुरु सुकदेव दियो है हेला ऐसा होय सो आवै ।
चरनदास बाना सतन का तौलै सीस चढ़ावै ॥५॥

---

(१) उदारता का हथियार । (२) चूर चूर । (३) टेक । (४) झब्बों या फुन्दनों की माला जिसे हाथी या घोड़े को पहिनाते हैं । (५) कठिन । (६) आसान ।

॥ शब्द ३ ॥

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

साधो टेक हमारी ऐसी ।
कोटि जतन करि छूटै नाहीं कोऊ करो अब कैसी ॥१॥
यह पग धरो सँभाल अचल होइ बोल चुके सोइ बोले ।
गुरु मारग में लेन न देनो अब इत उत नहिं डोले ॥२॥
जैसे सूर सती अरु दाता पकरी टेक न टारैं ।
तन करि धन करि मुख नहिं मोड़ैं धर्म न अपनो हारैं ॥३॥
पावक जारो जल में बोरो टूक टूक करि डारो ।
साध संगति हरि भक्ति न छोड़ूँ जीवन प्रान हमारो ॥४॥
पैज न हारूँ दाग न लागै नेक न उतरै लाजा ।
चरनदास सुकदेव दया से सब बिधि सुधरैं काजा ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

॥ राग सारंग ॥

हमारे राम नाम की टेक टारी ना टरै ।
लाख करो कोइ कोट करो जिय को तौ कुछ न सरै ॥१॥
ज्यों कामी कूँ तिरिया प्यारी ज्यों लोभी कूँ दाम ।
अमलदार कूँ अमल पियारो ऐसे हम कूँ नाम ॥२॥
कर सूँ दृढ़ गहि गहि कै पकरों हारिल[1] की लकड़ी भई ।
अब कैसे करि छूटै मो सों रोम रोम तन मन मई ॥३॥
ज्यों प्रहलाद पैज दृढ़ कीन्ही हरनाकुस से बहु अरे[2] ।
उबरो भक्त असुर गहि मारो परगट हो हरि आ खरे[3] ॥४॥
गुरु सुकदेव सहाय करी है अब पग पाछे क्यों परै ।
चरनहिंदास बचन नहिं मोड़ै सूर सती मूए टरै ॥५॥

---

(१) एक चिड़िया जो लकड़ी को ऐसा पकड़ती है कि मरे पर भी नहीं छोड़ती ।
(२) दुश्मन । (३) खड़े ।

॥ शब्द ५ ॥

॥ राग सारंग ॥

साधो टेक गई जाको सब गयो।
लाज गई अरु काज गये, सब बचन धर्म कछु ना रह्यो ॥१॥
जग में हाँस फाँस हिय माहीं, कायरपन यों दहि गयो।
अब पछिताये होत कहा है, वह पान पतेरो बहि गयो ॥२॥
पैज[1] तजी मुख कारो हूवो, धृग धृग जीवन तासु को।
बोझ गयो ओछे की संगति, यह परताप कुबास को ॥३॥
चरनदास सुकदेव कहैं यों, टेक न देवो सिर देवो।
बार बार नर देह न पइये, अपजस जग में क्यों लेवो ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

॥ राग सोरठ ॥

अरे ले गुरु के बचन चित धर रे।
छिन छिन तेरी आयु घटत है, बेग सँभारो घर रे ॥ १ ॥
सील छिमा जत[2] दृढ़ करि राखो, गर्ब गुमान निवारो।
पाँचो इन्द्री बस करि अपने, मन गनीम[3] को मारो ॥ २ ॥
काया कोट[4] बुहारि[5] जुक्ति सूँ, सत्त सिंहासन धरिये।
ता पर बैठि अमर पदवी लै, राज अभयपुर करिये ॥३॥
सब पर अमल चलै जब तेरो, तो सम और न कोई।
सेवक साहब लोहा कंचन, बुंद समुन्दर होई ॥ ४ ॥
बिघ्न कलेस आपदा नासै, निर्मल आनंद पावै।
चरनदास सुकदेव दया सूँ, रहनि गहनि समुझावै ॥ ५ ॥

---

(१) टेक। (२) जती का धर्म याने इंद्रियों को बस में रखना। (३) दुश्मन। (४) क़िला। (५) साफ करके।

॥ शब्द ७ ॥

॥ राग सोरठ ॥

साधो जो पकरी सो पकरी ।
अब तो टेक गही सुमिरन की, ज्यों हारिल की लकरी[१] ॥ १ ॥
ज्यों सूर ने सस्तर लीन्हो, ज्यों बनिये ने तखरी[२] ।
ज्यों सतवंती लियो सिंधौरा, तार गह्यो ज्यों मकरी ॥ २ ॥
ज्यों कामी कूँ तिरिया प्यारी, ज्यों किरपिन[३] कूँ दमरी[४] ।
ऐसे हम कूँ राम पियारे, ज्यों बालक कूँ ममरी[५] ॥ ३ ॥
ज्यों दीपक कूँ तेल पियारो, ज्यों पावक कूँ समरी[६] ।
ज्यों मछली कूँ नीर पियारो, बिछुरे देखै जम री ॥ ४ ॥
साधों के संग हरि गुन गाऊँ, ता ते जीवन हमरी ।
चरनदास सुकदेव दृढ़ायो, और छुटी सब गम[७] री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

॥ राग कल्यान ॥

वह राजा सो यह बिधि जानै । काया नगर जीतिबो ठानै ॥१॥
काम क्रोध दोउ बल के पूरे । मोह लोभ अति सावंत सूरे ॥२॥
बल अपनो अभिमान दिखावै । इन को मारि राह गढ़ धावै ॥३॥
पाँचो प्यादे देहि उठाई । जब गढ़ में कूदै मन लाई ॥४॥
ज्ञान खड्ग लै दुंद मचावै । कपट कुटिलता रहन न पावै ॥५॥
चुनि चुनि दुरजन हनि सब डारै । रहते सहते सकल बिडारै ॥६॥
मन सूँ ब्रह्म होय गति सोई । लच्छन जीव रहे नहिं कोई ॥७॥
अचल सिंहासन जब तू पावै । मुक्ति खवासी चँवर ढुरावै ॥८॥
आठौ सिद्धि जहाँ कर जोरैं । सौंहीं[८] ताकैं मुख नाहिं मोरैं ॥९॥
निस्चल राज अमल करै पूरा । बाजै नौबत अनहद तूरा ॥१०॥
तीन देव अरु कोटि अठासी । वै सब तेरी करैं खवासी ॥११॥

---

(१) पृष्ठ ५९ का नोट देखिये । (२) तराजू । (३) कंजूस । (४) दमड़ी जो नौ कौड़ी की होती है । (५) माता । (६) सेमर की रुई । (७) रंज । (८) सामने ही ।

गुरु सुकदेव भेद दियो नीको। चरनदास मस्तक कियो टीको।१२।
रनजीता यह रहनी पावै। थोथी करनी कथनि बहावै ॥१३॥

॥ शब्द ९ ॥

॥ राग करखा ॥

सोई जन सूर जो खेत में मड़ि रहै,
भक्ति मैदान में रहै ठाढ़ा।
सकल लज्जा तजै महा निरभय गजै,
पैज[1] नीसान जिन आय गाड़ा ॥ १ ॥
भये बहु बीर गंभीर जे धीर मति,
सबन कूँ जस कहत ग्रन्थ होई।
तिन बिषे कछू इक नाम बरनन करूँ,
सुनो हो सन्त दै चित्त सोई ॥ २ ॥
पिता सूँ रूठि ध्रुव पाँच हीं वर्ष को,
टेक गहि भक्ति के पंथ धायो।
छल भयो ना डिगो टेक पूरी भई,
जीत मैदान हरि दर्स पायो ॥ ३ ॥
हठेव[2] प्रहलाद हरि नाम छाँड़ो नहीं,
बाप ने त्रास दै बहु डिगायो।
टेक जब ना टरी राम रच्छा करी,
दुष्ट कूँ मारि कै जन जितायो ॥ ४ ॥
कबीर दादू[3] धने पहिर बक्तर[4] बने,
नामदेव[5] सारिखे बहुत कूदे।
सैन[5] सदना[5] बली[5] भक्त पीपा[5] बड़ो,
राम की ओर कूँ चले सूधे ॥ ५ ॥

---

(१) पृष्ठ ६० का नोट देखिये। (२) हठ किया। (३) धना भक्त। (४) लोहे की जंजीर का वस्त्र जिसे योधा लड़ाई में पहिनते हैं। (५) भक्तों के नाम।

मलूक[1] जैदेव[1] गजगाह[2] कलंगी धरे,
सूर[1] रैदास[1] मुख नाहिं मोड़ा।
ध्यान बंदूक में प्रेम रंजक जमा,
मीर माधव[1] चला कुदाय घोड़ा ॥ ६ ॥
दास मीरा पिली प्रेम सन्मुख चली,
छोड़ दइ लाज कुल नाहिं माना।
और सेवरी मढ़ी तोड़ ऊँची गढ़ी,
दौर कर माचली[3] प्रेम जाना ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव रनजीत सावँत कियो,
लड़े कलिजुग बिषै खंभ गाड़े।
बहुत सेना लिये ललक हूहू किये,
चरनही दास संग नाहिं छाँड़े ॥ ८ ॥

॥ शब्द १० ॥

॥ राग सोरठ ॥

जो नर इक छत[4] भूप कहावै ॥
सत्त सिंहासन ऊपर बैठै जत[5] ही चँवर दुरावै ॥ १ ॥
दया धर्म दोउ फौज महा लै भक्ति निसान चलावै।
पुन्न नगारा नौबत बाजै दुरजन सकल हलावै ॥ २ ॥
पाप जलाय करै चौगाना हिंसा कुबुधि नसावै।
मोह मुकद्दम काढ़ि मलुक सूँ ला बैराग बसावै ॥ ३ ॥
साधन नायब जित तित भेजै दै दै संजम साथा।
राम दोहाई सिगरे फेरै कोइ न उठावै माथा ॥ ४ ॥
निरभय राज करै निस्चल ह्वै गुरु सुकदेव सुनावै।
चरनदास निस्चै करि जानौ बिरला जन कोइ पावै ॥ ५ ॥

---

(१) भक्तों के नाम। (२) पृष्ठ ५८ का नोट देखिये। (३) मचल गई। (४) छत्रधारी।
(५) जती का धर्म याने इन्द्रियों को बस में रखना।

॥ शब्द ११ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

धनि वे नर हरि दास कहाये ।
राम भक्ति दृढ़ही करि पकरी आन धर्म सबही बिसराये ॥१॥
आठ पहर गलतान[1] भजन में प्रेम मगन हिय में हुलसाये ।
आप तरैं तारैं औरन कूँ बहुतक पापी पार लगाये ॥२॥
प्रभु दरसन बिन और न आसा धर्म काम अरु मोच्छ न चाहे ।
आठौं सिद्धि फिरैं संग लागी नेक न देखैं नैन उठाये ॥३॥
तिन को ऋषि मुनि जाप करत हैं हरि जन हरि दोउ संगहिं गाये ।
ऊँची पदवी इंदर हूँ ते देवन देखि अधिक ललचाये ॥४॥
कहैं सुकदेव चरनही दासा धनि माता ऐसे जन जाये ।
जीवत सोभा जग में पाई तन छूटे हरि माहिं समाये ॥५॥

—: ० :—

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

॥ राग मंगल ॥

महा मूढ़ अज्ञान भक्ति में क्या करा ।
गुरु सूँ बेमुख होय बड़ापन चित धरा ॥१॥
मुक्ति पंथ की ओर मंसूबे सूँ चला ।
तैसे बर्त[2] पै जाय जो नट भूला कला ॥२॥
गिरा धरनि पर आय भया तन चूर है ।
जो कोइ ऐसा होय बड़ा ही क्रूर[3] है ॥३॥
जैसे बृच्छ तें टूटि बिगड़ फल जात है ।
ऐसे गुरु तें छूटि कछू न रहात है ॥४॥
द्रुम[4] हीं सूँ लगि रहा जु फल नीका भया ।
पका भलो ही भाँति धनी के कर गया ॥५॥

(१) मतवाले । (२) रस्सा । (३) दुष्ट । (४) पेड़ ।

यही समझ गुरु संग कबहुँ नहिं त्यागिये।
मन में निस्चै लाय सरन हीं लागिये ॥६॥
सब तन अंगन माहिं दीनता छाइये।
गुरु के चरन निहारि कै सीस नवाइये ॥७॥
दोनों कर को जोरि कै अस्तुति कीजिये।
दरसन करि सुख पाय कै सिच्छा लीजिये ॥८॥
श्री सुकदेव दयाल ने मो सूँ यों कही।
चरनदास सिख जानि कै ऐसा हो सही ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

॥ राग बिलावल ॥

करि ले प्रभु सूँ नेहरा मन माली यार।
कहा गर्ब मन में धरै जीवन दिन चार ॥१॥
ज्ञान बेलि गहु टेक की दया क्यारी सँवार।
जत सत दृढ़ के बीजहीं बोवो तासु मँझार ॥२॥
सील छिमा के कूप को जल प्रेम अपार।
नेम डोल भरि खैंचि कै सींचो बाग बिचार ॥३॥
छल कीकर[1] कूँ काटि कै बाँधो बीरज बार।
सुमति सुबुद्धि किसान कूँ राखो रखवार ॥४॥
धर्म गुलेल जु प्रीत की हित धनुष सुधार।
झूँठ कपट पच्छीन कूँ ता सूँ मार बिडार ॥५॥
भक्ति भाव पौधा लगै फूलै रंग फुलवार।
हरि रस माता होय के देखै लाल बहार ॥६॥
सतसंगति फल पाइये मिटे कुबुधि बिकार।
जब सतगुरु पूरा मिलै चाखै अमृत सार ॥७॥
समझावैं सुकदेव जी चरनदास संभार।
तेरी काया में खिलै साँचो गुलजार ॥८॥

(१) बबूल का पेड़।

॥ शब्द ३ ॥
॥ राग देव गंधार ॥

मनुवाँ राम के ब्यौपारी।
अब के खेप भक्ति की लादी बनिज कियो तैं भारी ॥ १ ॥
पाँचो चोर सदा मग रोकत इन सूँ कर छुटकारी।
सतगुरु नायक के संग मिलि चल लूट सकै नहिं धारी[1] ॥ २ ॥
दो ठग मारग माहिं मिलैंगे एक कनक इक नारी।
सावधान हो पेंच न खैयो रहियो आप सँभारी ॥ ३ ॥
हरि के नगर में जा पहुँचोगे पैहो लाभ अपारी।
चरनदास तो कूँ समुझावैं हे मन बारम्बारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥
॥ राग धनाश्री ॥

अपना हरि बिन और न कोई।
मातु पिता सुत बंधु कुटुंब सब स्वारथ हीं के होई ॥ १ ॥
या काया कूँ भोग बहुत दै मरदन करि करि धोई।
सो भी छूटत नेक तनिक सी संग न चाली वोई ॥ २ ॥
घर की नारि बहुत हीं प्यारी तिन में नाहीं दोई[2]।
जीवत कहती साथ चलूँगी डरपन लागी सोई ॥ ३ ॥
जो कहिये यह द्रव्य आपनी जिन उज्जल मति खोई।
आवत कष्ट रखत रखवारी चलत प्रान ले जोई ॥ ४ ॥
या जग में कोइ हितू न दीखै मैं समझाऊँ तोई।
चरनदास सुकदेव कहैं यों सुनि लीजै नर लोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥
॥ राग धनाश्री ॥

मन में दीरघ भरे बिकारा।
सतगुरु साहब बैद मिले बिनु कटैं न रोग अपारा ॥ १ ॥

---

(१) लुटेरों की एक जाति। (२) एक जान दो क़ालिब।

त्रैगुन के त्रै दोष पगो है काम क्रोध ज्वर जारा।
तृस्ना बायु उठी उर अंतर डोलत द्वारहिं द्वारा ॥ २ ॥
बिषै बासना पित कफ लागी इन्द्रिन के सुख सारा।
सतसंगति रस करुवा लागे करत न अंगीकारा ॥ ३ ॥
सत पुरुसन को कहा न मानै सील छिमा नहिं धारा।
रसना स्वाद तजो नहिं मूरख आपनपौ न सँभारा ॥ ४ ॥
चरनदास सुकदेव मिले जब औषधि ज्ञान बिचारा।
तन मन को सब रोग मिटायो आवा गवन निवारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

॥ राग नट व बिलावल सारंग ॥

हमारे राम भक्ति धन भारी।
राज न डाँड़े चोर न चोरै लूटि सकै नहिं धारी ॥ १ ॥
प्रभु पैसे अरु नाम रुपैये मुहर मोहब्बत हरि की।
हीरा ज्ञान जुक्ति के मोती कहा कमी है ज़र[1] की ॥ २ ॥
सोना सील भंडार भरे हैं रूपा रूप अपारा।
ऐसी दौलत सतगुरु दीन्हीं जा का सकल पसारा ॥ ३ ॥
बाँटीं बहुत घटै नहिं कबहूँ दिन दिन डेवढ़ी डेवढ़ी।
चोखा माल द्रब्य अति नीका बट्टा लगै न कौड़ी ॥ ४ ॥
साह गुरु सुकदेव बिराजैं चरनदास बन जोटा[2]।
मिलि मिलि रंक[3] भूप होइ बैठे कबहुँ न आवै टोटा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

॥ राग काफी ॥

क्या दिखलावै सान[4] यह कुछ थिर न रहैगा।
दारा सुत अरु माल मुलुक का कहा करै अभिमान ॥ १ ॥
रावन कुंभकरन हरनाकुस राजा कर्न समान।
अरजुन नकुल भीम से जोधा माटी हुए निदान ॥ २ ॥

---

(१) रुपया, सोना। (२) ब्यौपारी। (३) दरिद्र। (४) शान।

छिन छिन तेरो तन छीजत है सुन मूरख अज्ञान ।
फिर पछताये कहा होयगा जब जम घेरै आन ॥ ३ ॥
बिनसैं[1] जल थल रबि ससि तारे सकल सृस्टि की हानि ।
अजहूँ चेत हेत करु हरि सूँ ताही को पहिचान ॥ ४ ॥
नवधा भक्ति साधु की संगति प्रेम सहित कर ध्यान ।
चरनदास सुकदेव हिं सुमिरौ जो चाहौ कल्यान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

॥ राग मालश्री ॥

थिर नहिं रहना है आखिर मौत निदान ॥ टेक ॥
देखत देखत बहुतक बिनसे आवत तुम्हरी बारि ।
जतन करो कोइ नाना बिधि के बचै नहीं नर नारि ॥ १ ॥
वे जोगेस्वर बस करि मौतै जड़ दियो बज्र किवाड़ ।
ह्वै बैठे ज्यों मरना नाहीं माटी ह्वै गये हाड़ ॥ २ ॥
कित गये रावन कुंभकरन से हरनाकुस सिसुपाल ।
संकर दियो अमर बर जिनको सो भी खाये काल ॥ ३ ॥
यह तन बरतन काँच को रे ठेस लगे खुलि जाय ।
आज मरै कै कोटि बर्स लौं अंत नहीं ठहराय ॥ ४ ॥
बीतत अवधि चलावा आवै छाँड़ि जगत की आस ।
गुरु सुकदेव चितावैं तो कूँ समुझ चरन हीं दास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

॥ राग गौरी ॥

आवो साधो हिलि मिलि हरि जस गावैं ।
प्रेम भक्ति की रीति समुझ करि हित सूँ राम रिझावैं ॥ १ ॥
गोबिंद के कौतुक गुन लीला तो को ध्यान लगावैं ।
सेवा सुमिरन बंदन अरचन[2] नौधा सूँ चित लावैं ॥ २ ॥

---

(१) नाश होंगे । (२) पूजन ।

अब की औसर भलो बनो है बहुरि दाँव कब पावैं।
भजन प्रताप तरैं भव सागर उर आनंद बढ़ावैं॥ ३॥
सतसंगति को साबुन लेकर ममता मैल बहावैं।
मन कूँ धो निरमल करि उज्जल मगन रूप हो जावैं॥ ४॥
ताल पखावज झाँझ मजीरा मुरली संख बजावैं।
चरनदास सुकदेव दया सूँ आवागवन मिटावैं॥ ५॥

॥ शब्द १० ॥

॥ राग आसावरी ॥

गुरुमुख यह जग झूँठ लखाया।
साध संत अरु बेद कहत हैं और पुरानन गाया॥ १॥
मृग तृस्ना के नीर लोभाना सीपी रूपा जाना।
फटिक सिला पर पीक परी है मूरख लाल लोभाना॥ २॥
सुपने में सब ठाठ ठटो है कुल नाते परिवारा।
दृष्टि खुली जब सब हीं नासे रहो नहीं आकारा॥ ३॥
ताते चेत भजन करि हरि को यहाँ मत मन को पागो।
वा घर गये बहुरि नहिं आवो आवा गवन न लागो॥ ४॥
या सुपने में लाभ यही है चरनदास मुख भाखो।
जोगेस्वर जा पद मिलि रहिया तुरिया हित चित राखो॥ ५॥

॥ शब्द ११ ॥

॥ राग मालश्री ॥

छिन भंगी छल रूप यह तन ऐसा रे॥ टेक॥
जा को मौत लगौ बहु बिधि सूँ नाना अंग ले बान।
बिख अरु रोग सस्त्र बहुतक हैं और बिघन बहु हान॥ १॥
निस्चै बिनसै बचै न क्यों ही जतन किये बहु दान।
गृह नच्छत्र अरु देव मनावैं साधैं प्रान अपान॥ २॥
अचरज जीवन मरिबो साँचो यह औसर फिर नाहिं।
पिछले दिन ठगियन संग खोये रहे सो योंहीं जाहिं॥ ३॥

जो पल है सो हरि कूँ सुमिरौ साध संगति गुरुसेव।
चरनदास सुकदेव बतावैं परम पुरातन भेव ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥
॥ राग मालश्री ॥

जानै कोइ संत सुजान यह जग सुपना है ॥ टेक ॥
सुप्न कुटुंबी आपा मानै सुप्न बैरागी लय।
सुपनै लेना सुपनै देना सुपनै निर्भय भय ॥ १ ॥
सुपनै राजा राज करत है सुपनै जोगी जोग।
सुपनै दुखिया दुख बहु पावै सुपनै भोगी भोग ॥ २ ॥
सुपनै सूरा रन में जूझै सुपनै दाता दान।
सुपनै पिय संग पावक जरिया सुप्न मान अपमान ॥ ३ ॥
सुपनै ज्ञानी गुरु गम जागै अपना रूप निहारि।
अज्ञानी सोवत सुपने में डसे अविद्या नारि ॥ ४ ॥
चरनदास सुकदेव चिताव सुपना सो सब झूठ।
अचरज समझ अगाध पुरानी मौन गहौ यहि मूठ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥
॥ राग बरवा ॥

या तन को कह गर्ब करत है, ओला ज्यों गलि जावै रे ॥टेक॥
जैसे बरतन बनो काँच को, ठपक[1] लगे बिनसावै[2] रे।
झूँठ कपट अरु छलबल करि कै, खोटे करम कमावै रे ॥ १ ॥
बाजीगर के बाँदर सा ज्यों, नाचत नाहिं लजावै रे।
जब लौं तेरी देह पराक्रम, तब लौं सबन सोहावै रे ॥ २ ॥
माय कहै मेरा पूत सपूता, नारी हुकुम चलावै रे।
पल पल पल पल पलटै काया, छिन छिन माहिं घटावै रे ॥ ३ ॥
बालक तरुन होय फिर बूढ़ा, जरा मरन पुनि आवै रे।
तेल फुलेल सुगंध उबटनो, अंबर अतर लगावै रे ॥ ४ ॥

(१) ठेस। (२) टूट जाता है।

नाना बिधि सूँ पिण्ड सँवारै, जरि बरि धूरि समावै रे।
कोटि जतन सूँ बचै न क्योंहीं, देवी देव मनावै रे॥ ५॥
जिनकूँ तू अपनो करि जानै, दुख में पास न आवै रे।
कोई झिड़कै कोइ अनखावै[1], कोई नाक चढ़ावै रे॥ ६॥
यह गति देखि कुटुँब अपने की, इनमें मत उरझावै रे।
अब हीं जम सूँ पाला परिहै, कोई नाहिं छुड़ावै रे॥ ७॥
औसर खोवै पर के काजे, अपनो मूल गँवावै रे।
बिन हरिनाम नहीं छुटकारो, बेद पुरान बतावै रे॥ ८॥
चेतन रूप बसै घट अंतर, भर्म सूल[2] बिसरावै रे।
जो टुक ढूँढ़ खोज करि देखै, सो आपहिं में पावै रे॥ ९॥
जो चाहे चौरासी छूटै, आवा गवन नसावै रे।
चरन दास सुकदेव कहत हैं, सतसंगति मन लावै रे॥१०॥

॥ शब्द १४ ॥
॥ राग बरवा ॥

तन का तनिक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे।
ठोकर लगे नेकहूँ चलतै, करि हैं प्रान पयाना रे॥ १॥
ऐंठ अकड़ सब छोड़ बावरे, तेज तमक इतराना रे।
रंचक जीवन जगत अचंभो, छिन माहीं मर जाना रे॥ २॥
मैं मैं मैं मैं क्यों करता है, माया माहिं लोभाना रे।
बहु परिवार देखि कै फूलो, मूरख मूढ़ अयाना रे॥ ३॥
टेढ़ो चलै मिरोरत मूछैं, बिषय बास लिपटाना रे।
आपन कूँ ऊँचो करि जानै, मातो मद अभिमाना रे॥ ४॥
पीर फकीर औलिया जोगी, रहैं न राजा राना रे।
धरनि अकास सूर ससि नासैं, तेरो क्या उनमाना[3] रे॥ ५॥
ठाढ़ा घात करै सिर पै जम, ताने तीर कमाना रे।
पलक पैंड़[4] पै तकि तकि मारै, काल अचानक बाना[5] रे॥ ६॥

(१) क्रोध करै। (२) कष्ट। (३) हैसियत। (४) रास्ता। (५) तीर।

स्वाँस निकसि चढ़ि आँखि जाहिं जब, काया जरै निदाना रे ।
तोकूँ बाँधि नरक लै जैहैं, करि हैं अगिन तपाना रे ॥७॥
अजहूँ चेत सीख ले गुरु की, करि ले ठौर ठिकाना रे ।
अमर नगर पहिचान सिदौसी[1], तब नहिं आवन जाना रे ॥८॥
हरि की भक्ति साधु की संगति, यह मति बेद पुराना रे ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, परम पुरातन[2] ज्ञाना रे ॥९॥

॥ शब्द १५ ॥

॥ राग सोरठ ॥

दम का नहीं भरोसा रे, करिले चलने का सामान ।
तन पिंजरे सूँ निकस जायगो, पल में पंछी प्रान ॥ १ ॥
चलने फिरते सोवत जागत, करत खान अरु पान ।
छिन छिन छिन छिन आयु घटत है, होत देह की हान ॥ २ ॥
माल मुलक औ सुख सम्पति में, क्यों हूवा गलतान ।
देखत देखत बिनसि जायगो, मत करु मान गुमान ॥ ३ ॥
कोई रहन न पावै जग में, यह तू निस्चै जान ।
अजहूँ समुझि छाँड़ु कुटिलाई, मूरख नर अज्ञान ॥ ४ ॥
टेरि चितावैं ज्ञान बतावैं, गीता बेद पुरान ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, राम नाम उर आन ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

॥ राग काफी ॥

वह बोलता कित गया नगरिया तजि कै ।
दस दरवाजे ज्यों के त्यों ही कौन राह गया भजि कै ॥ १ ॥
सूना देस गाँव भया सूना सूने घर के बासी ।
रूप रंग कछु औरै हूआ देही भई उदासी ॥ २ ॥
साजन थे सो दुरजन हूए तन को बाँधि निकारा ।
चिता सँवारि लिटा करि ता में ऊपर धरा अँगारा ॥ ३ ॥

(१) जल्दी । (२) प्राचीन, पुराना ।

ढह गया महल चुहल थी जा में मिल गया माटी माहीं ।
पुत्र कलित्तर भाई बंधू सब हीं ठेंक जलाहीं ॥ ॥ ४ ॥
देखत हीं का नाता जग में मुए संग नहिं कोई ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं हरि बिन मुक्ति न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥
॥ राग काफी ॥

समझौ रे भाई लोगो समझौ रे ।
अरे ह्यां नहिं रहना, करना अंत पयाना ॥ टेक ॥
मोह कुटुंब के औसर खोयो, हरि की सुधि बिसराई ।
दिन धन्धे में रैन नींद में ऐसे आयु गँवाई ॥ १ ॥
आठ पहर की साठों घरियाँ सो तौ बिरथा खोई ।
छिन इक हरि को नाम न लीन्हो कुसल कहाँ ते होई ॥ २ ॥
बालक था जब खेलत डोला तरुन भया मद माता ।
बृद्ध भये चिंता अति उपजी दुख में कछु न सुहाता ॥ ३ ॥
भूला कहा चेत नर मूरख काल खड़ो सर[1] साधे[2] ।
बिष को तीर खैंचि कै मारै आय अचानक बाँधै ॥ ४ ॥
झूँठे जग से नेह छोड़ करि साँचो नाम उचारो ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं अपनो भलो बिचारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥
॥ राग काफी ॥

छले सब कनक कामिनि रूप ।
सुर असुर अरु जच्छ गंधर्ब, इन्द्र आदिक भूप ॥ १ ॥
सावित्री बस कियो ब्रह्मा, पारबती त्रिपुरारि[3] ।
करन लीला संग लछमी, हरि लियो औतार ॥ २ ॥
रावन से अति बली मारे, मौत जिन बस कीन ।
पसु नरन की को चलावै, ये तौ अति आधीन ॥ ३ ॥
रूप रस में दे धतूरा, मोह फाँसी डार ।
तप की पूँजी छीनि कै कियो, सृङ्गि रिषि कूँ ख्वार[4] ॥ ४ ॥

(१) बान । (२) निशाना तके । (३) महादेव । (४) खराब ।

माया ठगनी ठगे सबहीं, बचे गुरु सुकदेव।
रनजीता कोइ ऊबरो, निजदास चरनन सेव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥
॥ राग बिहाग ॥

रे नर हरि प्रताप न जाना।
तुव कारन सब कुछ नित कीन्हा सो करता न पिछाना ॥ १ ॥
जेहिं प्रताप तेरि सुन्दर काया हाथ पाँव मुख नासा[1]।
नैन दिये जा सों सब सूझै होय रहा परकासा ॥ २ ॥
जेहिं प्रताप नाना बिधि भोजन बस्तर भूषन धारै।
वा का नाहिं निहोरा[2] मानै ताको नाहिं सँभारै ॥ ३ ॥
जेहिं प्रताप तू भूप भयो है भोग करै मन मानै।
सुख लै वा को भूलि गयो है करि करि बहु अभिमानै ॥ ४ ॥
अधिकी प्यार करै माता सूँ पल पल में सुधि लेवै।
तू तौ पीठि दिये ही नितहीं सुमिरन सुरति न देवै ॥ ५ ॥
कृत्यघनी[3] औ नूनहरामी[4] न्याय इंसाफ न तेरे।
चरनदास सुकदेव कहत हैं अजहूँ चेतु सबेरे ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥
॥ राग आसावरी ॥

साधो भक्ति नफा करि लीजे, दिन दिन काया छीजे ॥टेक॥
मकर[5] तजे तौ मक्का[6] मन[7] में, कपट तजै तौ कासी।
और तीर्थ सबहीं जग न्हाया, नाहीं छुटी जम फाँसी ॥ १ ॥
भाल तले[8] तिरबेनी राजे, बिरले जन कोइ न्हावै।
सगुरा[9] होय सो नित उठि परसै, निगुरा जान न पावै ॥ २ ॥
काया मंदिर में हरि कहिये, बेद पुरान बतावै।
इत उत भूले लोग फिरत हैं, धोखे कूँ सिर नावै ॥ ३ ॥
जंतर टोना मूड़ हिलावन, ता कूँ साँच न मानो।
तजि कै सार असार गह्यो है, ता पर भयो सयानो ॥ ४ ॥

(१) नाक। (२) इहसान। (३) नाशुकरा। (४) नमक हराम। (५) कपट। (६) मुसलमानों का तीर्थ। (७) घट, अन्तर। (८) पेशानी के नीचे। (९) गुरमुख।

चरनदास सुकदेव कहत हैं, निज करि मूल गहीजै।
पार ब्रह्म जिन सृष्टि उपाई[1], ताहि ओरि चित दीजै॥ ५॥

॥ शब्द २१॥
॥ राग बिलावल॥

अजब फकीरी साहबी भागन सूँ पैये।
प्रेम लगा जगदीस का कछु और न चहिये॥ १॥
राव रंक कूँ सम गिनैं कुछ आसा नाहीं।
आठ पहर सिमिटे रहैं अपने ही माहीं॥ २॥
बैर प्रीत उनके नहीं नहिं बाद बिबादा।
रूठे से जग में रहैं सुनैं अनहद नादा॥ ३॥
जो बोलैं तौ हरि कथा नहिं मौनै[2] राखैं।
मिथ्या करुवा दुरबचन कबहूँ नहिं भाखैं॥ ४॥
जीव दया अरु सीलता नख सिख सूँ धारैं।
पाँचो दूतन बसि करैं मन सूँ नहिं हारैं॥ ५॥
दुख सुख दोनों के परे आनंद दरसावैं।
जहाँ जाय अस्थल करैं माया पवन न जावैं॥ ६॥
हरि जन हरि के लाड़िले कोइ लहै न भेवा।
सुकदेव कही चरनदास सूँ कर तिन की सेवा॥ ७॥

॥ शब्द २२॥
॥ राग बिलावल॥

ऐसा ही दुरवेस हो जग को बिसरावै।
ईमान सबूरी साँच सूँ सोइ बख्शा जावै॥ १॥
ज़र[3] ज़न[4] और ज़मीन कूँ दिल में नहिं लावै।
फ़िक्र फ़क़ीरी को बुरा वह ज़िक्र छुटावै[5]॥ २॥
फे फ़ाक़े[6] का गुन यही राज़िक़[7] करे यादा।
क़ाफ़ क़िनाअत[8] सुख घना आनंद अगाधा॥ ३॥
रे रियाज़त[9] बलवान है हरि कूँ अपनावै।
आख़िर को दीदार हीं निस्चै करि पावै॥ ४॥

---

(१) पैदा की। (२) चुप। (३) रुपया। (४) औरत। (५) अभ्यास के लिये चिंता बड़ा बिघ्न है जिससे सुमिरन नहीं बन पड़ता। (६) उपास। (७) अन्नदाता। (८) संतोष। (९) भजन, बंदगी।

इज्ज़[1] को धारे रहै रहै सब रूँ नीचा ।
सुकदेव कही चरनदास सूँ पावै पद ऊँचा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥
॥ राग केदारा ॥

सो मेरो कहो मान रे भाई ।
ज्ञान गुरु को राखि हिय में बंध कटि जाई ॥ १ ॥
बालपन तैं खेलि खोये गई तरुनाई ।
चेत अजहूँ भली बर[2] है जरा[3] हूँ आई ॥ २ ॥
जिनके कारन बिमुख हरि तें फिरत भटकाई ।
कुटुंब सब हीं सुख के लोभी तेरे दुखदाई ॥ ३ ॥
साधु पदवी धारना घर छाड़ु कुटिलाई ।
बासना तजि भोग जग की होय मुक्ताई ॥ ४ ॥
बहुरि जोनी नाहिं आवै परम पद पाई ।
चरनदास सुकदेव के घर अनंद अधिकाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥
॥ राग रेखता ॥

दो दिन का जग में जीवना करता है क्यों गुमान ।
ऐ बेसहूर गोदी टुक राम को पिछान ॥ १ ॥
दावा खुदी का दूर कर अपने तु दिल सेती ।
चलता है अकड़ अकड़ के ज्वानी का जोस[4] आन ॥ २ ॥
मुरसिद[5] का ज्ञान समझ के हुसियार हो सिताब[6] ।
गफलत को छोड़ सुहबत साधों की खूब जान ॥ ३ ॥
दौलत का ज़ौक़[7] ऐसे ज्यों आब[8] का हुबाब[9] ।
जाता रहैगा छिन में पछतायगा निदान ॥ ४ ॥
दिन रात खोवता है दुनिया के कारबार ।
इक पल भी याद साँइ की करता नहीं अजान ॥ ५ ॥
सुकदेव गुरू ज्ञान चरनदास को कहैं ।
भज राम नाम साँचा पद मुक्ति का निधान ॥ ६ ॥

---

(१) आजिज़ी, दीनता । (२) बेला, अवसर । (३) बुढ़ापा । (४) जोश । (५) गुरू । (६) जल्द । (७) चाह, लालसा । (८) पानी । (९) बुल्ला ।

॥ शब्द २५ ॥
॥ रेखता राग भय्यार ॥

तज के जगत की रीत को कर अपनी तदबीर।
इस जग भरोसे ख्वार हो गये साह और अमीर॥
सुन यार मन यार मन ॥ १ ॥
इक दम करारी है नहीं छिन छिन में फेरै रंग।
कबहूँ तो हैराँ सुख घना चल बिचल बेढंग॥
सुन यार मन यार मन ॥ २ ॥
हशमत व शौकत[1] थिर नहीं मत देख हो मगरूर।
ठहराव ता कूँ है नहीं भग्गल बड़ाई धूर॥
सुन यार मन यार मन ॥ ३ ॥
जाहिं स्वाँसा सब चले ज्यों आब दर गिरबाल[2]।
याद साहब की करो सुमिर हरि हर हाल॥
सुन यार मन यार मन ॥ ४ ॥
सुकदेव सतगुरु ने मुझे कायम बताया राम।
चरनहिं दासा चित धरौ जपौ आठौं जाम।
सुन यार मन यार मन ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥
॥ राग बिलावल ॥

भक्ति गरीबी लीजिये तजिये अभिमाना।
दो दिन जग में जीवना आखिर मरि जाना ॥ १ ॥
पाप पुन्न लेखा लिखैं जम बैठे थाना।
कहा हिसाब तुम देहुगे जब जाहि दिवाना[3] ॥ २ ॥
मात पिता कोइ ह्वाँ नहीं सब हीं बेगाना।
द्रव्य जहाँ पहुँचै नहीं नहिं मीत पिछाना ॥ ३ ॥
एक सों एकहिं होयगी ह्वाँ साँच तुलाना।
काहू की चालै नहीं छनै दूध अरु पाना[4] ॥ ४ ॥
साहब की कर बंदगी दे भूखे दाना।
समुझावैं सुकदेव जी चरनदास अयाना ॥ ५ ॥

(१) ऐश्वर्य और दबदबा। (२) जैसे चलनी में पानी नहीं ठहरता। (३) कचहरी।
(४) पानी।

॥ शब्द २७ ॥
॥ राग काफी ॥

घरी दो में मेला बिछुरै साधो, देखि तमासा चलना ।
जो ह्याँ आकर हुए इकट्ठे, तिन सूँ बहुरि न मिलना ॥१॥
जैसे नाव नदी के ऊपर, बाट बटाऊ आवैं ।
मिल मिल जुदे होयँ पल माहीं, आप आप को जावैं ॥२॥
या बारी बिच फूल घने रे, रङ्ग सुगन्ध सुहावैं ।
लागैं खिलैं फेरि कुम्हिलावैं, झरैं टूटि बिनसावैं ॥३॥
दारा सुत सम्पति को सुख, ज्यों मोती ओस बिलावैं ।
ह्याँई मिलैं और ह्याँ नासैं, ताको क्यों पछितावैं ॥४॥
दै कुछ लै कुछ करि ले करनी, रहनी गहनी भारी ।
हरि सूँ नेह लगाव आपनो, सो तेरो हितकारी ॥५॥
सत संगति को लाभ बड़ो है, साध भक्त समझावैं ।
चरनदास ही राम सुमिर ले, गुरु सुकदेव बतावैं ॥६॥

॥ शब्द २८ ॥
॥ राग भैरो ॥

चेतौ रे नर करो बिचार । छल रूपी है यह संसार ॥१॥
सुपना मात पिता सुत बंधू । सुपना है सबहीं संबंधू ॥२॥
देखै कहै सुनै सो सुपना । या जग में नाहीं कोइ अपना॥३॥
सुपना धरती और अकासा । सुपना चंद सूर परकासा ॥४॥
सुपना जल थल पावक पौन । सुपना जोग भोग अरु मौन॥५॥
सुपना माया को ब्यौहार । सुपना कुल नाता परिवार ॥६॥
सुपना देस नाम अरु भेस । सुपना उत्पति परलय सेस ॥७॥
सुपना राजा राना राव । सुपनै बानिक बन्यौ बनाव॥८॥
सुपनै लरै मरै अरु भागै । सुपनै सोवै सुपनै जागै ॥९॥
सुप्ना है यह सबहीं ठाठ । उठी पैंठ जब मुंद गइ हाट ॥१०॥
जो कछु है सो सबहीं सुपना । साँचा हरि हरि हरि हरि जपना ११
क्यों भूला मूरख मस्तान । अजहूँ समुझिलेहि गुरु ज्ञान।१२।

गफलत छाँड़ि भजौ हरि नाम । जौ चाहै तू निस्चल धाम ॥१३॥
ज्यों सोवत सुपनो दरसाय । आँखि खुलै जबहीं मिटिजाय॥१४॥
ऐसे ही सब सुपना जान । अचल अखण्ड रहै भगवान॥१५॥
सब ठाँ[1] ब्रह्म रह्यो भर पूर । ना अति निकट नहीं बहु दूर ।१६।
जो कोइ खोजै सोई पावै । तत दरसी यह भेद बतावै ॥१७॥
गुरु सुकदेव पुकारि चितावैं । झूठ साँच को न्याव चुकावैं॥१८॥
चरनदास सब सुपना जान । सदा एक रस ब्रह्म पिछान ॥१६॥

॥ शब्द २६ ॥
॥ राग सोरठ ॥

मो कूँ भय अति वाही दिन को ।
जब यह पंछी माया लोभी त्यागै पिंजरा तन को ॥ १ ॥
सुत दारा के मोह फँसो है लोभ लगो है धन को ।
काम क्रोध को काँपा[2] खायो भयो अधीन सबन को ॥ २ ॥
पाँच पहर धंधे में खोया नाम न लेत भजन को ।
तीन पहर नारी संग मातो मानत सुख इन्द्रिन को ॥ ३ ॥
आपन को ऊँचो करि जानै करि अभिमान बरन[3] को ।
सतसंगति के निकट न आवै जो है ठाठ तरन को ॥ ४ ॥
जम किंकर जब आनि गहैंगे तब ना धीर धरन को ।
गुरु सुकदेव सहाय करैंगे आसरो दास चरन को ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥
॥ राग हेली ॥

यह नहिं अपनो देस हेली[4] ह्याँ नहिं मन को दीजिये ।
अपने घर को चालिये करि जोगिन को भेस ॥टेक॥
कानन मुद्रा जोग की हेली ज्ञान जटा सिर धारि ।
चोला भक्ति सोहावनो धीरज आसन मारि ॥ १ ॥
सेली सत बैराग की हेली सील भभूति रमाय ।
जत की सींगी कीजिये बारम्बार बजाय ॥ २ ॥

---

(१) ठिकाने । (२) लासा जिससे चिड़िया फँसती हैं । (३) जात पाँत । (४) हे आली, हे सखी ।

कर्म जलाय धुनी करो हेली झूमों दसवें द्वार ।
अमल सुधा रस पीजिये बाढ़ै रंग अपार ॥ ३ ॥
इस बाने पिय को मिलौ हेली सदा सुहागिन होय ।
गुरु सुकदेव बतावईं चरनदास बनु सोय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३१ ॥
॥ राग काफी ॥

गुमराही छोड़ दिवाने मूरख बावरे ।
अति दुरलभ नर देह भया, गुरु देव सरन तू आव रे ॥१॥
जग जीवन है निस को सुपनो, अपनो ह्वाँ कौन बताव रे ।
तोहिं पाँच पचीस ने घेरि लियो, लख चौरासी भरमाव रे ॥२॥
बीति गई सो बीति गई, अजहूँ मन कूँ समुझाव रे ।
मोह लोभ सूँ भागि के त्यागविषय, कामक्रोधकूँ धोय बहाव रे ॥३॥
गुरु सुकदेव कहैं सबहीं तजि, मन मोहन सूँ मन लाव रे ।
चरनदास पुकारि चिताय दियौ, मत चूकै ऐसे दाँव रे ॥४॥

॥ शब्द ३२ ॥
॥ राग सोरठ ॥

भाई रे अवधि[1] बीती जात ।
अंजुली जल घटत जैसे, तारे ज्यों परभात[2] ॥ १ ॥
स्वाँस पूँजी गाँठि तेरे, सो घटत दिन रात ।
साधु संगत पैंठ लागी, ले लगै सोइ हाथ ॥ २ ॥
बड़ो सौदा हरि सँभारौ, सुमिर लीजै प्रात ।
काम क्रोध दलाल हैं, मत बनिज कर इन साथ ॥ ३ ॥
लोभ मोह बजाज ठगिया, लगे हैं तेरि घात ।
शब्द गुरु को राखि हिरदय, तौ दगा नहिं खात ॥ ४ ॥
आपनी चतुराइ बुधि पर, मत फिरै इतरात ।
चरनदास सुकदेव चरनन, परस तजि कुल जात ॥ ५ ॥

(१) उमर । (२) सुबह ।